चन्दामामा
सितम्बर १९८४

गले से 'खिचखिच' दूर करो...

'खिचखिच' है क्या ?
जब भी आपके गले में खराश हो या गला सूखा लगने लगे— तो समझिए आपके गले को 'खिचखिच' ने पकड़ा.

विक्स लीजिए, इसे दूर कीजिए
विक्स लीजिए.
विक्स खांसी की गोलियों में गले को आराम पहुंचाने वाली ६ विक्स औषधियां हैं, जो 'खिचखिच' दूर हटाती हैं.

इसलिए, जब भी गले में 'खिचखिच' हो, विक्स लो.

OBM/1829-HN

पुरस्कार जीतिए

कॅमल

पहला इनाम (१) रु. १५/-
दूसरा इनाम (३) रु. १०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. ५/-
१० प्रमाणपत्र

बिन्दुओं वाली रेखा पर काटिए
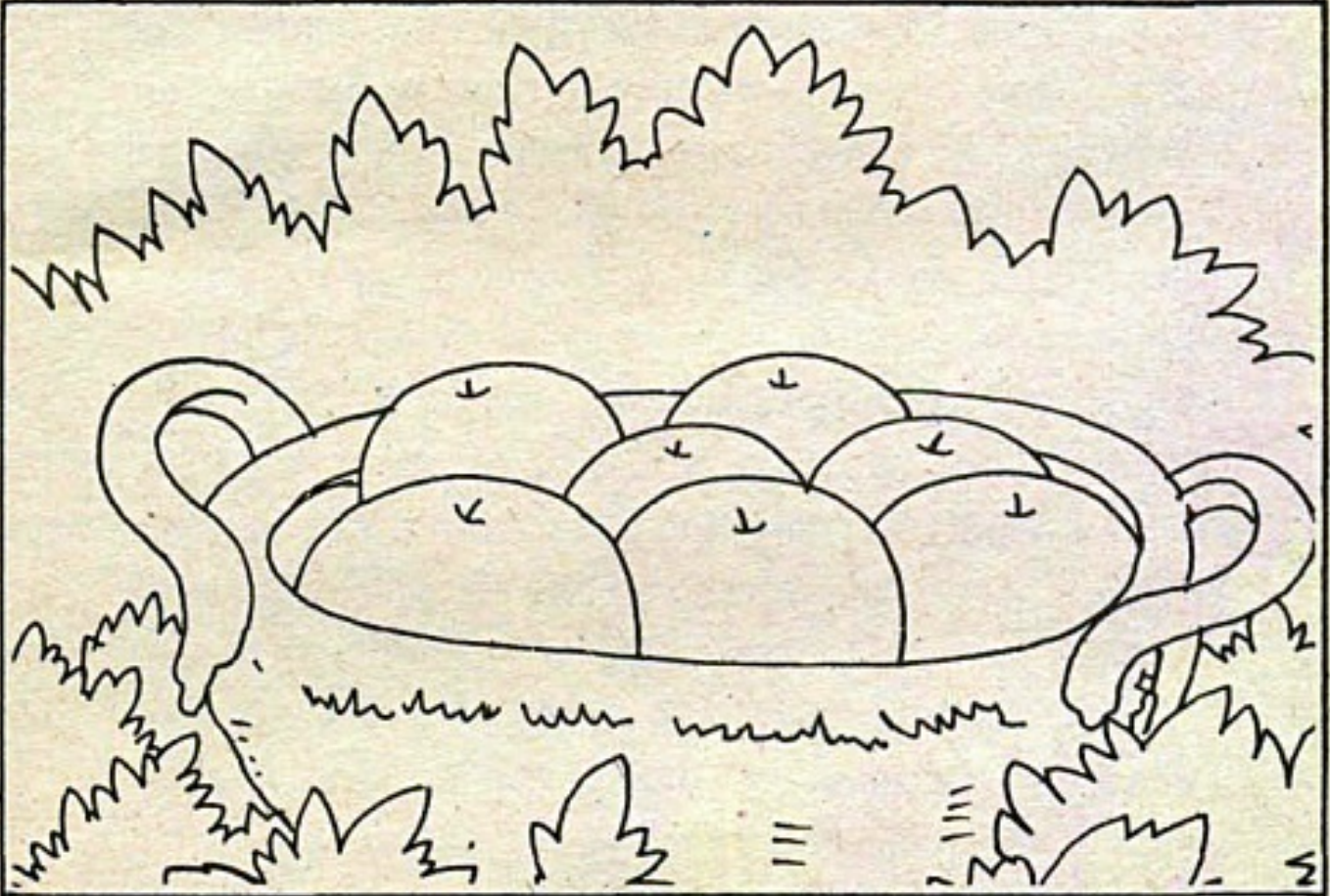
इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

चंदामामा, पो. बॉ. नं. ११५०१, नरिमन पॉइंट पोस्ट ऑफ़िस, बम्बई ४०० ०२१.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

Name:.. Age:....................

Address:..

....

प्रवेशिकाएं 30-9-84 से पहले पहले भेजी जायें.

CONTEST- NO 38

Vision/CPL/84073 HIN

हमारा महान देश !
हमारी महान् संस्कृति !

हम जितने अलग-अलग हैं, उतने ही एक हैं। हमारी भाषाएं भले ही अलग-अलग हों, लेकिन उन सब का विषय एक है। हमारे रीति-रिवाज़ भिन्न जरूर हैं, लेकिन पर्व समान हैं। यहाँ कितने ही धर्म और मत हैं लेकिन उन सब की संस्कृति एक है। अनेकता में एकता, यह भारतीय संस्कृति की विशेषता है।

कश्मीर से कन्या कुमारी तक की इस एकता को स्थापित किया हमारे वैदिक ऋषियों ने। राम और कृष्ण जैसे अवतारों ने इसे सींचा। बुद्ध और महावीर ने इसमें फूल और फल खिलाये। आदि शंकराचार्य ने सम्पूर्ण भारत के चारों दिशाओं में चार पीठ बना कर इसकी नींव को और भी पक्का कर दिया। पंजाब के गुरु नानक तथा अन्य गुरु बंगाल के गौरांग महाप्रभु और रामकृष्ण परमहंस, महाराष्ट्र के सन्त ज्ञानेश्वर व नामदेव तथा गुजरात के स्वामी दयानन्द ने यह सिद्ध कर दिया कि हमारी महानता हमारी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता में है।

सूर्य की किरण समपार्श्व (प्रिज़्म) में खंडित होकर भिन्न-भिन्न रंगों की सुषमा तो देती है, लेकिन अपने मूल गुण-ताप की शक्ति खो बैठती है। वही किरण सूर्यमुखी दर्पण के माध्यम से अपनी बिखरी हुई शक्ति को एकत्र कर सूर्य की-सी ज्वाला उत्पन्न कर देती है।

वर्षा की एक बून्द मार्ग का एक रोड़ा भी नहीं बहा पाती। लेकिन इन्हीं नन्हीं बून्दों से बना बरसाती दरिया दुर्गम पहाड़ों को भी लाँघ जाता है।

आइये, हम सब भी एक होकर अपनी राष्ट्रीय एकता की रक्षा करें-यह एकता जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है-यह एकता जिस पर हमें गर्व है।

अमर वाणी

सौलभ्य लभ्य वस्तूना, मवज्ञेन न गौरवम्,।

मलये भिल्ल कान्तानाम, चन्दनं चेन्धनायते।

[जो वस्तु सरलता से प्राप्त हो जाती है, उसके प्रति उपेक्षा का भाव हो जाता है, जैसे मलय पर्वत की भील-स्त्रियाँ चन्दन जैसे दुर्लभ पदार्थ को जलावन के काम में लाती हैं।]

चन्दामामा

संस्थापकः चक्रपाणि संचालकः नागिरेड्डी

प्यारे बच्चो !

पिछली बार मैंने तुम्हें बताया था कि तुम कैसे ऊँचे विचारों की चोटियों पर चढ़ सकते हो ! संयम् और अनुशासन ही एक ऐसा मंत्र है जो इस काम में तुम्हारी सहायता कर सकता है। शायद तुमने कोशिश की होगी अपने ऊपर क़ाबू रखने की—सच्ची कोशिश बराबर सफलता लेकर आती है।

ऊँचाइयाँ और भी हैं। उदाहरण के रूप में—क्या तुम अपने से छोटे बच्चे, कमजोर, बूढ़े या महिला के लिए बस की सीट छोड़ते हो ? क्या उसके लिए छीना-झपटी करते हो ? या मार-पीट पर उतारू हो जाते हो ? यदि नहीं तो तुम सचमुच बहादुर बच्चे हो। बस की सीट के लिए लड़ना-झगड़ना या अपने से अधिक आवश्यकता वाले के लिए नहीं छोड़ना यह बताता है कि हम अपने को इतना कमज़ोर या बीमार मान लेते हैं कि थोड़ी देर खड़े नहीं रह सकते। सच पूछो तो बहादुर बच्चे ऐसे अवसर की तलाश में रहते हैं कि कब उन्हें दूसरों की सेवा करने का मौक़ा मिले।

यह मौक़ा हमें हर रोज़ मिलता है— घर में, विद्यालय में, मार्ग में, यात्रा में। जो निस्वार्थ भाव से ऐसे मौक़ों पर दूसरों के लिए अपनी सुख-सुविधा का त्याग करते हैं, वे ही आगे चल कर देश के महापुरुष बनते हैं। तुम भी उनमें से एक हो सकते हो !

तुम्हारा चन्दामामा !

वर्षः ३८ सितम्बर १९८४ अंकः १

एक प्रतिः २-०० :: वार्षिक चन्दाः २४-००

चन्दामामा विशेष संवाद

पंखयुक्त जल पोत

अमेरिका के निस्कोन्सिन विश्व विद्यालय के वैज्ञानिकों ने हाल ही में एक पंखयुक्त जलपोत का निर्माण किया है। यह पानी पर मछली के समान पंख चलाते हुए आगे बढ़ता है।

आवाज़ से रोग निदान

नाड़ी की जाँच करके रोगनिदान करना पुरानी पद्धति है। लेकिन सोवियत रूस के वैज्ञानिकों की खोज के अनुसार अब किसी की आवाज़ का अध्ययन करके ही उसके स्वास्थ्य का पता लगाया जा सकता है।

वीडियो-खेलों के दुष्परिणाम

वीडियो-खेलों के भयंकर दुष्परिणाम हो सकते हैं। यहाँ तक कि अपस्मार जैसी घातक मानसिक बीमारी तक की सम्भावना हो सकती है। वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान द्वारा हाल में ही पता लगा कर यह निष्कर्ष निकाला है।

क्या आप जानते हैं ?

१. भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात कौन-सा है ?
२. हिमालय की घाटियों में स्थित हिन्दुस्तान का पवित्र तीर्थस्थान बताइये।
३. अहमदाबाद के समीप बहनेवाली नदी का नाम क्या है ?
४. हमारे देश का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा प्रदेश कौन-सा है ?
५. भारत में विक्टोरिया स्मारक प्रदर्शनशाला कहाँ है ?

(उत्तर पृष्ठ ६४ पर देखें।)

शंभु की कहानी

शंभुनाथ को कहानी सुनाने का बड़ा शौक था। उसके पोते शिवराज को खेलों का शौक था। शम्भु अक्सर उसे डांट देता— "अरे छोकरे ! दिन भर का यह कैसा खेल है ?" फिर भी शिवराज, घर से भागकर बाहर खेलने निकल जाता और शाम को ही घर लौटता। कभी-कभी शम्भु अपने पोते को जबरदस्ती बिठाकर कहानियाँ सुनाया करता। पर यदि वह थोड़ा-सा भी असावधान रहता, तो शिवराज वहाँ से खिसक कर भाग जाता।

शम्भु ने अपने पोते के अन्दर कहानियों के प्रति अभिरुचि पैदा करने की अनेक प्रकार से कोशिश की। उसके लिए अपने पास मिठाइयाँ और खाने की अन्य चीज़ें भी छिपाकर रख लेता था। फिर भी शिवराज अपने दादा शम्भु की कहानी का नाम लेते ही घबरा कर भाग जाता था।

शम्भू की समझ में नहीं आया कि शिवराज को कहानी सुनने में तक़लीफ़ क्या है ? उसने अपनी पत्नी, बेटे और बहू को बुला कर पूछा— "क्या मेरी कहानियाँ सुनने में तुम लोगों को नीरस मालूम होती हैं ?"

वैसे बड़ों को कहानियाँ सुनने का अधिक शौक नहीं होता। फिर भी वे शंभु को अप्रसन्न न करने के ख्याल से यही जवाब देते— "आप की कहानियाँ बड़ी मज़ेदार होती हैं। हमारे दिल में उन कहानियों को सुनने की बड़ी इच्छा होती है, पर कमबख्त शिवराज को क्यों पसन्द नहीं आतीं ? हमारी समझ में नहीं आता।"

यह मौक़ा पाकर शम्भुनाथ ने उन लोगों से अनुरोध किया— "तब तो तुम्हीं लोग मेरी कहानियाँ सुन लो। मैं तुम लोगों को इस प्रकार कहानियां सुनाऊँगा, जिससे तुम लोगों के काम में कोई बाधा न पड़े।"

इसी विचार से बत्तियां बनाते वक़्त अपनी पत्नी को, रसोई बनाते वक्त अपनी बहू को और

रमा चौधरी
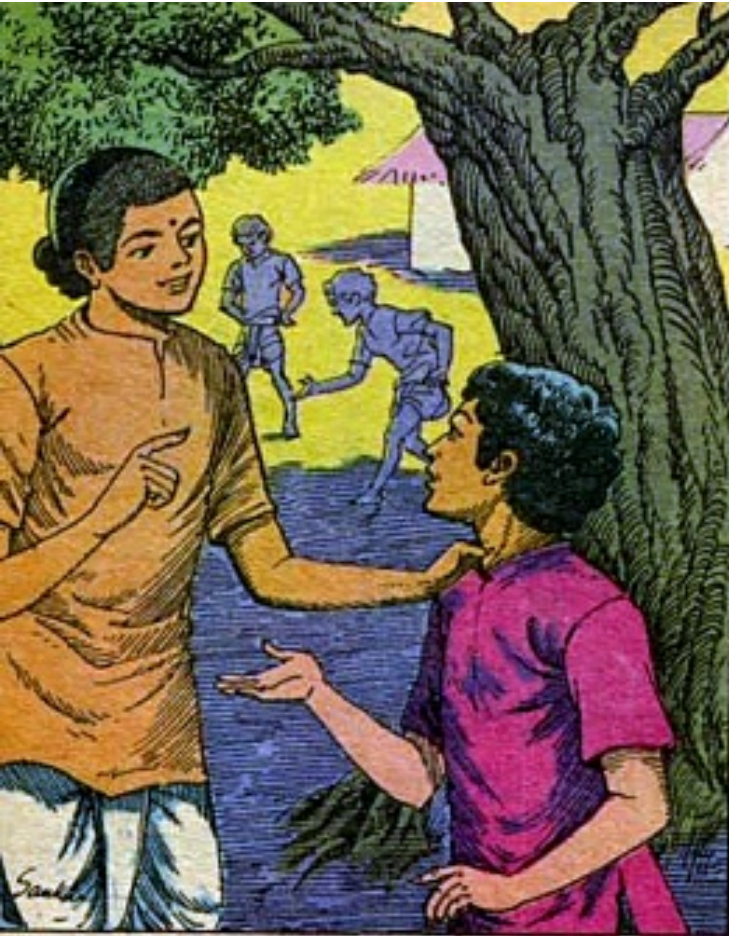
पिछवाड़े में साग-सब्जी की क्यारियाँ सींचते वक्त पुत्र को शम्भु कहानियाँ सुनाने लगा ।

दरअसल बड़ों को भी शम्भुनाथ की कहानियाँ सुनने में खीझ पैदा होती थी । इस मुसीबत से बचने के लिए वे शिवराज को पकड़ लाते और शम्भु के हाथ सौंप कर कहानियाँ सुनने की मुसीबत से बच जाते ।

इस प्रकार थोड़े दिन बीत गये । इसके बाद शिवराज ने अपने दादा के साथ यह समझौता कर लिया-वह प्रति दिन अपने दादा के मुँह से एक ही कहानी सुनेगा । इसके बाद उसको खेलने के लिए जाने देना होगा ।

शम्भु ने शिवराज की शर्त मान ली । पर वह अपनी बुद्धिमत्ता और चातुरी के द्वारा अपने पोते को धोखा देने लगा । कभी शम्भू इतनी लम्बी कहानी सुनाता, जो कभी ख़त्म होने का नाम न लेती । इस पर शिवराज को रोना आ जाता । कभी-कभी वह एक साथ चार-पांच कहानियों को जोड़ते हुए एक ही लम्बी कहानी के रूप में सुना देता । इस तरह शिवराज को खेलने जाने का मौक़ा नहीं मिलता, क्योंकि उसकी शर्त के मुताबिक़ वह कहानी समाप्त होने के बाद ही खेलने के लिए जा सकता था ।

उन्हीं दिनों उस गाँव में एक नया लड़का आया । शिवराज को वह लड़का अच्छा लगा ।

नये लड़के ने एक दिन शिवराज से पूछा— "थोड़ी देर और पहले क्यों नहीं आते ? तब हम देर तक खेल सकते हैं !"

इस पर शिवराज ने अपने दादा की कहानी सुनने की मुसीबत बताई । नये लड़के ने उत्साहित होकर पूछा— "सचमुच तुम्हारे दादा कहानियाँ सुनाते हैं । कहानियाँ सुनने का तो मुझे बड़ा शौक है ।"

"तो तुम मेरे दादा की कहानियाँ क्यों नहीं सुन लेते ? मैं किसी और लड़के के साथ खेल लूँगा ।" शिवराज ने प्रसन्न होकर कहा ।

"अच्छी बात है । मेरे घर में कोई भी मुझे कहानियाँ नहीं सुनाता !" नये लड़के ने अपने परिवार वालों की शिकायत की ।

अगले दिन शिवराज ने नये लड़के का अपने दादा के साथ परिचय कराया और कहा— "दादा जी ! यह मेरा दोस्त है ।

कहानियाँ सुनने का इसे बड़ा शौक है ।"

शम्भू बड़ा खुश हुआ । शिवराज को छुट्टी देकर उसने नये लड़के को एक कहानी सुनाई-उस कहानी में एक राजकुमार और दूसरे देश की राजकुमारी प्रमुख पात्र थे । राजकुमारी को एक दिन एक भयंकर मांत्रिक उठाकर ले गया । इस पर राजकुमार ने कई वर्ष तक कष्ट उठाकर अनेक अद्भुत विद्याएँ सीखीं और अन्त में मांत्रिक का वध करके राजकुमार के साथ विवाह कर लिया ।

यह कहानी सुनकर नये लड़के ने शंभु दादा से पूछा— "इसके बाद किसी दूसरे देशों के मांत्रिक राजकुमारियों को उठाकर तो नहीं ले गये ?"

"उठा ले गये तो हमें क्या मतलब ?" शम्भु ने हंसते हुए कहा ।

"क्योंकि हमारा राजकुमार अच्छा आदमी है, परोपकारी है, अनेक विद्याओं में प्रवीण है। ऐसा व्यक्ति यह सोचकर चुप नहीं बैठा रहेगा कि मैंने एक राजकुमारी के साथ शादी कर ली और मेरी ज़िम्मेदारी ख़त्म हो गई । यदि कोई और मुसीबत में रहेंगें तो उनकी मदद के लिए वह अवश्य जायेगा । है न ?" नये लड़के ने पूछा ।

यह प्रश्न सुनकर शम्भु बहुत प्रसन्न हुआ। बोला— "हां, तुमने बड़ा अच्छा सवाल किया ।" यह कह कर वह पलभर रुक गया,

फिर बोला— "उस समय मिथिला राज्य में एक मांत्रिक का अत्याचार बढ़ने लगा । उसने एक सौ राजकुमारों तथा एक सौ एक राजकुमारियों को काली देवी की बलि चढ़ाने का अपने मन में निश्चय किया ।" इस प्रकार कहानी शुरू करके उसने उसे यों समाप्त की— "उस मांत्रिक का संहार पहले राजकुमार ने ही किया और वह बहुत समय बाद अपने देश को लौट गया ।"

पर नये लड़के ने चट सवाल किया— "दादा जी ! इतने दिनों तक हमारी राजकुमारी अपने राज्य में क्या चुपचाप बैठी रह पायेगी ? वह अपने राज्य को मंत्रियों के हाथ सौंपकर पति की खोज में चल देगी । राजकुमारी अगर

घर-छोड़ कर निकलेगी तो उस पर ढेर सारी मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ेगा ।"

शम्भु दादा ने फिर कहानी शुरू कर दी । पर कहानी सुनने के बाद नये लड़के के मन में कोई न कोई सन्देह पैदा होता ही रहा । इसलिए शम्भु की कहानी का अन्त न हो पाया ।

आख़िर कहानी सुनाते-सुनाते शम्भु थक गया और बोला— "शेष कहानी मैं तुम्हें कल सुनाऊँगा ।"

"कल तक मैं नहीं रुक सकता । मुझे तो अभी कहानी चाहिए ।" नये लड़के ने कहा ।

शम्भु ने गहरी सांस लेकर कहा— "बेटा, अन्दर जाकर पानी लाओ । मैं पहले अपनी प्यास बुझा लूँ, फिर कहानी पूरी करूँगा ।"

नया लड़का घर के अन्दर चला गया । मौक़ा पाकर शम्भु घर से निकल पड़ा और लगा अन्धा-धुन्ध दौड़ने । रास्ते में जिस किसी ने भी उसके दौड़ने का कारण पूछा, उन्हें यही जवाब देता गया कि मैं अपने पोते की खोज में जा रहा हूँ । शिवराज को जब मालूम हुआ कि उसका दादा उसको घर लिवा ले जाने को आ रहे हैं तब वह बराबर उसकी नज़र से अपने को बचाने की कोशिश करता रहा । मगर अन्त में किसी ने उसको पकड़कर उसके दादा के हाथ में सौंप दिया ।

शम्भु हांफता हुआ बोला— "बेटा शिव राज ! डरो मत ! मैं तुम्हें कहानियाँ सुनाने के लिए नहीं आया हूँ । आज हमारे घर तुम जिस नये लड़के को लाये हो, उसको आइन्दा हमारे घर आने से रोक दो, तो तुमको फिर कभी कहानियाँ नहीं सुनाऊँगा ।"

शिवराज समझ न सका कि अचानक उसके दादा के मन में यह विचित्र परिवर्तन कैसे हुआ । फिर उसके इस परिवर्तन को देख उसने खुशी के साथ दादा की बात मान ली ।

इसके बाद शम्भुनाथ ने फिर किसी को कहानियाँ नहीं सुनाईं । वे भली-भांति यह समझ गये कि किसी से उसकी इच्छा के विरुद्ध जबरदस्ती काम लेना कितना कष्टदायक होता है !

१६

[हसन गोरी के साथ पिंगल इफ़्री किले के पास पहुँचा और उसके दरवाजे खोलने लगा। इस पर मरु दस्युओं के द्वारा दरवाजों के पीछे रखी बारूद में विस्फोट हुआ। फलतः कुछ सैनिक मर गये और कुछ घायल हो गये। इसके बाद निकट की पहाड़ियों में मरु दस्यु भैरव नाथ तथा हसन गोरी के बीच भीषण युद्ध हुआ। वहीं पर अचानक पिंगल को पद्मपाद दिखाई पड़ा। बाद में.....]

पिंगल ने कभी कल्पना तक नहीं की थी कि इस जन्म में फिर से उसकी मुलाक़ात पद्मपाद से हो जायेगी। और वह भी अवन्ती नगर से कहीं हजारों मील दूर के रेगिस्तानी पहाड़ों में।

यह घटना पिंगल के लिए आश्चर्यजनक थी। पर दूसरे ही पल उसका आश्चर्य सन्देह में बदल गया। इस पर उसने अपने बाजू में खड़े हसन गोरी की ओर दृष्टि प्रसारित की।

हसन गोरी के चेहरे पर भी शंका और संशय झलक रहे थे। उसने पिंगल का कन्धा पकड़ कर अपने निकट खींच लिया और गुप्त रूप से उससे पूछा— "पिंगल, यह पद्मपाद कौन है? कहीं यह रेगिस्तानी डाकू भैरव नाथ तो नहीं?"

पिंगल इसका उत्तर देने ही जा रहा था कि इस बीच पद्मपाद उसके समीप पहुँचा। उसने हसन गोरी की ओर उंगली दिखा कर पूछा— "पिंगल! यह कौन है?" यह प्रश्न सुनकर

पिंगल एक दम घबरा गया । उसकी घबराहट को भांप कर मुस्कुराते हुए पद्मपाद ने पूछा— "पिंगल ! क्या तुम मेरे बारे में शंका करते हो ?"

पिंगल की समझ में न आया कि क्या उत्तर दे ? उसकी दृष्टि पद्मपाद से हट कर हसन गोरी पर केंद्रित हो गई ! पिंगल थोड़ी देर केलिए मौन रहा । इस पर हसन गोरी ने पद्मपाद की ओर एक क़दम आगे बढ़ा कर कहा— "महाशय ! मैं नहीं जानता आप कौन हैं ? लेकिन..." इतना कह कर वह रुक गया । हसन गोरी की बातों पर पद्मपाद खिल-खिला कर हंस पड़ा ।

फिर पिंगल के समीप जाकर स्नेह पूर्वक उसके कन्धे पर थपकी देते हुए बोला— "पिंगल, तुम दोनों इस बात की शंका तो नहीं कर रहे हो कि अभी-अभी इस पहाड़ी प्रदेश से होकर भागने वाले रेगिस्तानी डाकुओं का नेता मैं ही हूँ ? मैं फुरसत के समय अपनी सारी कहानी तुम्हें सुनाऊँगा । मेरे जीवन का जो लक्ष्य था, तुम्हारी मदद से मैं ने उसे प्राप्त किया । इस समय मैं बहुत प्रसन्न हूँ । वास्तव में हमारा जीवन एक रंगमंच के समान है । न मालूम हमें कब किन-किन रूपों में कैसा अभिनय करना पड़ता है ! यह बात भी सही है कि सब लोग अपने जीवन काल में अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य की पूर्ति नहीं कर पाते हैं । इस दृष्टि से हम दोनों भाग्यवान हैं । पर आज इस मरुभूमि में मुझे पाकर तुम्हें आश्चर्य होगा ही । साथ ही मुझको यहाँ पाकर तुम्हारे मन में शंका पैदा होना भी सहज ही है ।"

"नहीं ! पद्मपाद ! ऐसी बात नहीं है ।" यह कहकर पिंगल हसन गोरी की तरफ़ संकेत करके बोला— "ये हैं नवाब साहेब के ऊंटों के दल के नेता हसन गोरी ! भैरव नाथ नामक मरुदस्यु की खोज में ये सारे प्रदेश छान रहे हैं ।"

ये बातें सुनते ही पद्मपाद हसन गोरी की तरफ मुड़ कर बोला— "महाशय, यदि आप इस रेगिस्तान के रक्षक के नेता हैं तो सामने दिखाई देने वाली गुफाओं के अन्दर कुछ बन्दी बनाये हुए व्यापारियों की रक्षा करना आपका

धर्म है। मरुदस्यओं के नेता भैरव नाथ ने अनेक व्यापारियों को उन गुफाओं में बन्दी बना कर रख छोड़ा है। बेचारे वे लोग अपने माल-असबाब से तो हाथ धो बैठ चुके हैं। साथ ही उनके प्राण भी संकट में पड़े हैं।"

इन सब के बावजूद हसन गोरी का पद्मपाद पर विश्वास नहीं जमा। इसको भांप कर पिंगल बोला— "हसन साहेब, आप पद्मपाद को मेरे पास छोड़ जाइए। आपको डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं इनके द्वारा सारा वृत्तान्त जान लूँगा। यदि ये ही डाकुओं का नेता भैरव नाथ हों तो इनके हाथ-पैर बांध कर मैं आपके हाथ सौंप दूँगा।"

पिंगल की बातों ने हसन गोरी के मन की सारी शंकाओं को निर्मूल कर दिया। इस पर वह कुछ सैनिकों को साथ लेकर पद्मपाद के द्वारा संकेत की गई पहाड़ी गुफाओं की ओर चल पड़ा।

"पिंगल, इस अपरिचित देश के रेगिस्तानी पहाड़ों में तुम्हारे साथ मुलाक़ात मेरे लिए आश्चर्य की बात है। बताओ, अवन्ती नगर के अपने निजी मकान को छोड़ तुम को इतनी दूर किस कारण से आना पड़ा?" पद्मपाद ने पूछा।

"पद्मपाद, मेरी कहानी बड़ी दीनता पूर्ण है। मैं आपके द्वारा दी गई महिमा भरी थैली, धन-सम्पत्ति तथा सब प्रकार से मेरी सहायता करने वाले भल्लूक केतु से भी वंचित हो गया। इन सारी व्यथाओं का मूल कारण दुष्ट स्वभाव

वाले मेरे अग्रज ही हैं। आप से विदा लेकर अपने घर पहुँचने के बाद से लेकर आज तक मैंने जो यातनाएँ झेलीं, उनका पूरा वृत्तान्त सुनाना हो तो काफी समय लगेगा। यदि आप किसी और मांत्रिक को पराजित करने के लिए यहाँ पर आये हुए हों तो मैं फिर आप की मदद करने के लिए तैयार हूँ। आप मेरे हित चिन्तक हैं। इसलिए आप की हर तरह से सहायता करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ।"

पिंगल की अंतिम बातों से पद्मपाद को काफी आत्म-सन्तोष हुआ, लेकिन उस की दीनतापूर्ण हालत पर उसे भारी दुख पहुँचा। यह जानकर कि पिंगल महिमा भरी थैली व संपत्ति खो बैठा है, पद्मपाद का दिल व्यथा से भर उठा।

खास कर भल्लूक पर्वतों के पास महामाय को पराजित करने में पिंगल ने इसकी बड़ी सहायता की थी, उसे पद्मपाद आज तक भूल न पाया।

"पिंगल, मैं किसी और मांत्रिक को हराने के लिए इस प्रदेश में नहीं आया हूँ। महामाय की समाधि से हमने जो अपूर्व शक्तियों वाली वस्तुएँ प्राप्त कीं, वे जब तक मेरे पास रहेंगी, तब तक मुझे किसी का डर नहीं है। जब मनुष्य अपने लक्ष्य को पूरा कर लेता है, तब वह अन्तर्मुखी हो जाता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने जीवन का लक्ष्य वैभव पूर्ण और विलास मय बनाना मानते हैं। वैभव और विलास भले ही हमें क्षणिक सुख प्रदान करते हों, पर उनके द्वारा हमें सच्चा सुख और सन्तोष प्राप्त नहीं होता। इसीलिए मैंने सच्चे सुख और आत्म संतोष प्राप्त करने का एक मात्र उपाय देशाटन माना। इसीलिए मैं केवल देशाटन करने और पुण्य तीर्थों का सेवन करने के लिए घर से चल निकला हूँ। इस कारण से मैं इस वक्त एक साधारण यात्री के वेश में सार्थवाहों के एक दल में शामिल हो कर इस प्रदेश में पहुँच गया हूँ। आज शाम को ही कुछ लुटेरों ने उस सार्थवाह दल पर हमला करके उन की मूल्यवान वस्तुओं को लूट लिया और उन सारे व्यापारियों को सामने दीखने वाली उस गुफा में बन्दी बना लिया है। उनमें कुछ लोग अवन्ती नगर के निवासी भी हैं। शायद उनमें से तुम्हारे परिचित कुछ लोग भी हों।"

इन बातों को सुनकर पिंगल को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पद्मपाद की ओर सन्देह भरी दृष्टि दौड़ा कर पूछा— "पद्मपाद! आप तो महा मांत्रिक हैं। क्रूर एवं दुष्ट रेगिस्तानी डाकू जब उन व्यापारियों को लूट रहे थे, तब आप उसे चुपचाप देखते क्यों रहे? आप चाहते तो उन सब को पल भर में पराजित कर भगा सकते थे या उनका संहार कर सकते थे न।"

पिंगल की बातें सुनकर पद्मपाद मुस्कुरा उठा। फिर बोला— "पिंगल, मैं जब उस सार्थवाही दल के साथ निकला तब मैंने उनको सिर्फ़ एक यात्री बता कर अपना परिचय दिया। ऐसा न होकर यदि मैंने अपना वास्तविक परिचय दिया होता कि मैं अमुक मांत्रिक हूँ तो वे लोग

मुझ को अपने साथ नहीं लेते। इसी कारण से उनको रेगिस्तानी डाकुओं द्वारा लुटते देख कर भी अपना असली रूप गुप्त रखने के लिए मैंने उन डाकुओं पर अपने मंत्र-तंत्रों का प्रयोग नहीं किया और मैं इन शिलाओं की ओट में छिप गया।"

"पद्मपाद ! आप का व्यवहार मुझको अत्यंत आश्चर्य में डाल रहा है। आपके पास भूगोल, अंगूठी, वज्र खचित मूठ वाली छुरी-ये जो अद्भुत शक्तियाँ हैं; इनमें से किसी एक की मदद से भी आप सारे दर्शनीय स्थलों व तीर्थों को देख सकते हैं ! ऐसी हालत में मात्र एक साधारण यात्री बन कर यात्रा की सारी यातनाओं को सह कर इन व्यापारियों के साथ आने की आपको क्या जरूरत पड़ी ? आप तो घर बैठे-बैठे सारे दर्शनीय स्थलों को देख कर आनन्द लूट सकते थे और पुण्य तीर्थों का सेवन कर सकते थे। इस से एक तो आप को इस प्रकार शारीरिक एवं मानसिक यातनाओं को झेलने की आवश्यकता न पड़ती और दूसरे आप इस प्रकार ख़तरों में पड़ने से अपने को बचा सकते थे न ?" पिंगल ने पूछा।

"हे पिंगल, कहीं तुम अभी तक मुझ पर यह सन्देह तो नहीं कर रहे हो कि मैं उन लुटेरों के दल का नेता हूँ।" यों कह कर पद्मपाद पिंगल की आँखों में विस्मय पूर्ण दृष्टि प्रसारित कर बोला— "सभी देशों का भ्रमण करते हुए वहाँ के पुण्य तीर्थों का सेवन करके उस का फल प्राप्त करना है तो मुझे भी सब की भांति

पैदल ही यात्रा करनी पड़ेगी ! लेकिन ऐसा न करके अद्भुत शक्तियों की सहायता से अपने वांछित प्रदेश में दूसरे ही क्षण पहुँच जाने से मुझ को असली तीर्थ यात्रा का फल प्राप्त न होगा।"

उनके बीच यों वार्तालाप चल रहा था। उधर हसन गोरी के सैनिकों के कोलाहल के साथ व्यापारियों के करुण क्रन्दन और रुदन से सबके हृदय दहल उठे। देखते-देखते उस प्रदेश में उनकी चीख-पुकार से सारा वायु मण्डल काँप उठा। इस पर पिंगल और पद्मपाद ने अपना वार्तालाप बन्द करके उस दिशा की ओर दृष्टि घुमाई। उसी समय एक सैनिक दौड़ता हुआ आकर पिंगल के समीप पहुँचा,

और बोला— "भैरव नाथ को पकड़ने के लिए हसन गोरी आप लोगों की मदद चाहते हैं।"

पिंगल ने पद्मपाद की ओर विनती भरी दृष्टि दौड़ा कर कहा— "पद्मपाद, इस हसन गोरी ने मुझ को इस मरुभूमि के अन्दर भूख-प्यास से तड़प कर मरने से बचाया है। मैं इसके बदले में उनकी कोई न कोई सहायता करना चाहता हूँ। इस अंधेरे में रेगिस्तानी डाकुओं को बन्दी बनाना मानव मात्र के लिए सम्भव नहीं है। ये रेगिस्तानी डाकू और इनका नेता भैरवनाथ बड़े ही निर्दयी और क्रूर हैं। यहाँ से समीप के एक क़िले के सारे सैनिकों का वध करके छल-कपट के द्वारा हमारा भी अन्त करने का उन दुष्टों ने षडयंत्र रचा था। इसलिए इन रेगिस्तानी डाकुओं को बन्दी बनाने में आप अपनी अद्भुत शक्तियों का प्रयोग करके हमारी मदद कीजिए। इस प्रकार इस प्रदेश में यात्रा करने वाले यात्रियों और व्यापारियों की इन रेगिस्तानी डाकुओं से रक्षा का प्रबन्ध कीजिए। आप का यह उपकार ये लोग कदापि नहीं भूलेंगे। इस प्रदेश के सुलतान भी आप की इस मदद से बहुत ही खुश हो जायेंगे।"

"पिंगल, तुम चाहते हो, इसलिए मैं उनकी मदद अवश्य करूँगा, लेकिन इस के द्वारा सभी व्यापारियों पर यह रहस्य प्रकट हो जाएगा कि मैं एक मांत्रिक हूँ। इसके बाद उनके साथ मेरी यात्रा असंभव है। फिर भी तीर्थ क्षेत्रों के दर्शन करने के लिए अनेक मार्ग हैं।" यों कह कर पद्मपाद ने अपने हाथ में एक पत्थर लेकर उस को तलवार से छोटे-छोटे टुकडों में काटना शुरू

किया । पद्मपाद की इस करनी पर पिंगल को बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने पद्मपाद का कन्धा पकड़ कर झकझोरते हुए पूछा— "पद्मपाद, आप यह क्या कर रहें हैं ? उधर रेगिस्तानी डाकू व्यापारियों की संपत्ति लूट कर भागे जा रहे हैं। आप पहले उनका अन्त करने का प्रयत्न तो कीजिए ।"

पद्मपाद ने मंदहास करके अपनी मुट्ठी में पत्थर के कुछ टुकड़े लिये और उन्हें पिंगल को दिखा कर कहा— "तुम कहते हो कि इस अन्धेरे में उन डाकुओं का पीछा करना मानव मात्र के लिए संभव नहीं है। ऐसी हालत में मुझ को किसी मंत्र-तंत्र का ही सहारा लेना होगा न ? इसलिए मैं अन्धेरे में देख सकने वाले भेड़ियों तथा बाघों को उन डाकुओं को हमारे पास लौटाने के लिए भेज रहा हूँ। देखो; इस हथेली में जो बड़े टुकड़े हैं, ये बाघ हैं, और छोटे टुकड़े भेड़िये हैं।" यों कहकर उन टुकड़ों में मंत्र फूंक कर उन्हें अन्धेरे में चारों तरफ़ फेंक दिया ।

देखते-देखते उन पहाड़ी शिलाओं के बीच से भयंकर गर्जन करते हुए भेड़िये और बाघ बाहर निकल आये तथा कूदते हुए चारों तरफ फैल गये ।

इस अद्भुत दृश्य को देख पिंगल अवाक् रह गया । उसी समय हसन गोरी के द्वारा पहाड़ी गुफा से मुक्त किये गये सभी व्यापारी उन के पास आ पहुँचे ।

व्यापारियों ने सोचा था कि अब उन का जिन्दा रहना असंभव है । रेगिस्तान में मरुदस्यु

ओंके नेता भैरव नाथ का आधिपत्य था। उस को पराजित कर उन को मुक्त करने वाला वहाँ पर कोई न था। ऐसी हालत में अचानक अपने को मुक्त पाकर वे सब आश्चर्य चकित थे !

उनके साथ-साथ आनेवाले हसन गोरी ने हवा में अपने हाथ लहराते हुए कहा— "पिंगल, यह कैसा आश्चर्य है ! इस पहाड़ी प्रदेश में किसी ने आज तक एक भी बाघ को नहीं देखा है। पर आज ये सारे बाघ और भेड़िये कहाँ से आ गये ?" यह कहकर वह विस्फारित नेत्रों से पिंगल की ओर देखता रह गया।

"पद्मपाद, अब आपका रहस्य छिपाने से कोई प्रयोजन नहीं सिद्ध होगा। इसलिए क्या मैं इन सबको सच्ची बात बतला दूँ। आप को कोई आपत्ति तो नहीं है न।" पिंगल ने पूछा।

पद्मपाद ने स्वीकृति सूचक सर हिलाया और अपने अंगरखे से महामाय की जादूवाली अंगूठी निकाल कर वहाँ एक ऊँची पहाड़ी शिला पर रख दी। तत्काल वह सारा प्रदेश आँखों को चौंधियाने वाली कांति के साथ दिन के समान दमक उठा।

पिंगल ने वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों को संक्षेप में बताया कि पद्मपाद एक महान मंत्र वेत्ता हैं।

फिर हसन गोरी की तरफ़ मुँह करके बोला— "हसन, उस मरु दस्यु भैरवनाथ को लेकर आप को घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। पद्मपाद ने जिन भेड़ियों और बाघों को भेज दिया है, वे भैरवनाथ और उसके अनुचरों को लौटा कर यहाँ पर हांक ले आयेंगे।"

पिंगल अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि इस बीच उन पहाड़ी घाटियों में हाहाकार मच गया। इसके साथ भेड़ियों और बाघों के गर्जन भी सुनाई दिये।

देखते-देखते सैकड़ों की संख्या में रेगिस्तानी डाकू चारों तरफ़ से भेड़ियों तथा बाघों से घिरे उन खूंख्वार जानवरों से बच कर भागने का प्रयत्न करने लगे तथा इस प्रयत्न में कहीं रास्ता न पाकर वे भयभीत हो पद्मपाद और पिंगल की ओर चिल्लाते हुए आने लगे।

स्वावलम्बन

बरसात का मौसम था। तूफ़ान के प्रकोप से चारों तरफ़ भयंकर वातावरण छाया हुआ था। रह-रह कर बिजली कौंध जाती थी। वृक्षों की डालें टूट कर पतंगों की भांति उड़ रही थीं। ऐसी भयंकर रात में दृढ़व्रती विक्रम वृक्ष के पास पुनः लौट आए। वृक्ष पर से शव उतार कर कंधे पर डाल यथा प्रकार चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगे। तब शव में स्थित बेताल ने पूछा— "राजन, मेरे मन में यह शंका हो रही है कि आप यह जो श्रम उठा रहे हैं, इसका कारण क्या आपका भोलापन है या प्रारब्ध आपके विपरीत है। अत्यन्त दानी व दयालु भी कभी-कभी कठोर और स्वार्थी बन जाते हैं। इस बात का क्या भरोसा है कि आपको इस कार्य में जिन लोगों ने प्रवृत्त किया है, वे कार्य सफल होने के बाद ऐसा कठोर व्यवहार नहीं करेंगे। इसके उदाहरण के रूप में मैं आपको भीम सिंह नामक एक राजा की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को

बेताल कथा
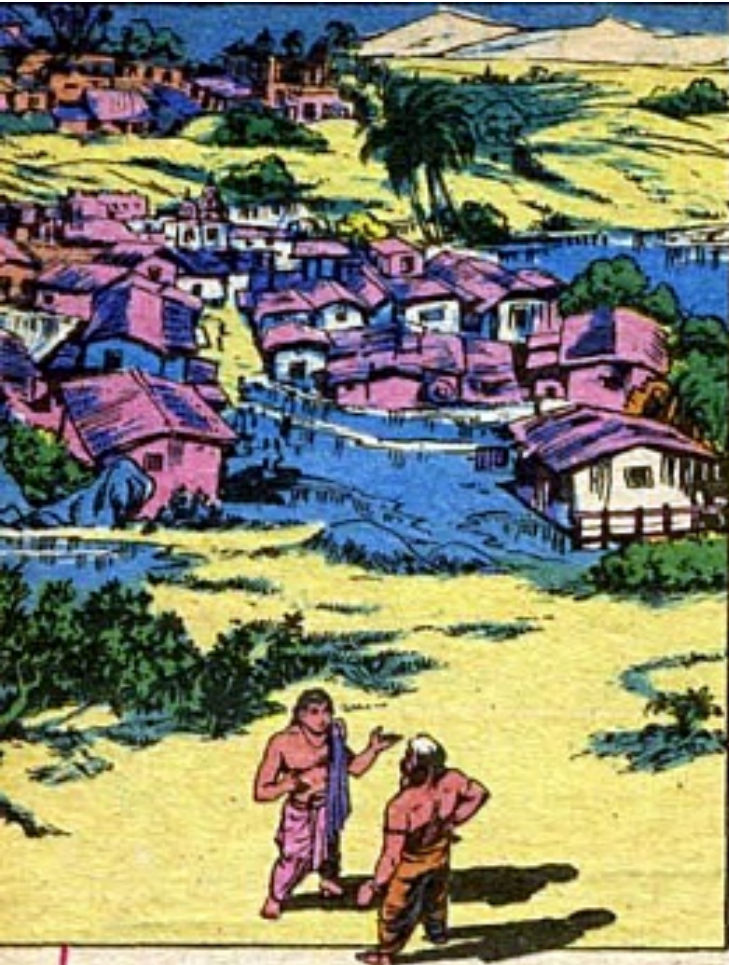
भुलाने के लिए आप उनकी कहानी ध्यान से सुन लीजिए !"

राजा भीम सिंह गिरि दुर्ग नामक राज्य पर शासन करते थे। उस राज्य में रामपुर और लक्ष्मणपुर नामक गांव अगल-बगल में थे। रामपुर का अधिकारी भरत सिंह जनता का हित चाहने वाला था। पर लक्ष्मणपुर का अधिकारी शिशुपाल सिंह अत्यन्त स्वार्थी था।

भरत सिंह की लोक प्रियता देख कर शिशुपाल मन ही मन उसके साथ जलता था और किसी न किसी प्रकार मौक़ा देखकर उस का अपमान करना चाहता था।

रामपुर नीची भूमि पर बसा हुआ था। उसके चतुर्दिक जहां भी पानी बरसता तो वह सारा रामपुर की ओर बह कर चला जाता और उसे जलमग्न कर देता। इसको रोकने के लिए भरत सिंह कई वर्षों से गंभीरता पूर्वक कोई उपाय सोच रहा था।

एक बार बसन्त ऋतु में उस गाँव में एक सन्त पधारे। वे रामपुर की समृद्धि को देख प्रसन्न होकर बोले— "तुम्हारे गाँव में हर महीने तीन बार वर्षा हो जाये और तुम लोग इसी प्रकार सदा प्रसन्न रहो।"

यह सुनकर भरत सिंह घबरा गये और बोले— "स्वामी, आप महीने में तीन बार वर्षा हो जाने का आशीर्वाद न दीजिए। हम लोग वर्षा से डरते हैं।" यों कहकर उन्होंने वर्षा की अधिकता से गाँव पर होने वाले संकट का परिचय दिया।

इस पर सन्त बोले— "तब तो मैं एक बार सारा गाँव घूम कर देखना चाहता हूँ। तुम भी मेरे साथ चलो।"

भरत सिंह ने सन्त को सारा गाँव दिखाया और उन्हें समझाया कि वर्षा का सारा पानी किस दिशा से कैसे गाँव में एकत्र हो जाता है।

सन्त थोड़ी देर तक सोचते रहे। फिर बोले— "तुम्हारी समस्या को हल करना कोई बड़ी बात नहीं है। तुम गाँव के चारों तरफ़ एक ऐसा खंदक खुदवा दो जो चौड़ा और गहरा हो। साथ ही गाँव के समीप एक ओर तालाब भी बनवा दो। उनमें इस प्रकार की मोरियां बनवा दो, जिससे तालाब का पानी खंदक में और

खंदक का पानी पहाड़ी प्रदेश में बह जाए। इस काम को पूरा करने के लिए डेढ़ लाख सिक्कों की ज़रूरत होगी। यह रक़म तुमको इस देश के राजा भीम सिंह से मांगने पर अवश्य मिल जायेगी।"

सन्त की सलाह भरत सिंह को बड़ी अच्छी लगी। उसने इस कार्य-क्रम को इसी प्रकार अमल करने का निश्चय किया। इस बीच शिशु पाल सिंह को यह ख़बर मिली कि एक सन्त ने रामपुर जाकर भरत सिंह को एक सुन्दर सलाह दी है। उसने यथाशीघ्र सन्त को अपने गाँव आने का निमंत्रण दिया और उनसे निवेदन किया— "महानुभाव, आप हमें भी ऐसी सलाह दीजिए जिससे हमारा गाँव हमेशा सुखी और सम्पन्न रहे।"

लक्ष्मणपुर थोड़ी ऊंची भूमि पर बसा हुआ था। उस गाँव को किसी प्रकार से बाढ़ का भय न था। वहाँ के सभी लोग सुखी और सम्पन्न थे और शान्तिमय जीवन बिता रहे थे।

सन्त ने सारा गाँव घूम कर देखा और कहा— "इस गाँव के निवासी बड़े ही भाग्यवान हैं। इस गाँव में ही नहीं, बल्कि इसके चारों तरफ़ नारियल के बगीचे हैं। इसके रेशे से जनता के लिए अनेक प्रकार की उपयोगी चीज़ें बनाकर देश और विदेशों में भी बेची जा सकती हैं। इसके लिए लागत धन के रूप में पांच लाख सिक्कों की जरूरत पड़ेगी। तुम इस देश के राजा से धन प्राप्त करके यह उद्योग शुरू कर दो। इससे अनेक लोगों के जीविकोपार्जन की समस्या भी हल हो जाएगी।"

यह सलाह सुन कर शिशुपाल सिंह अत्यन्त आनन्दित हुआ।

उधर भरत सिंह बरसात से अपने गाँव को होने वाली हानि से बचाने के लिए राजा से मिलने के लिए निकल पड़ा। यह ख़बर सुनकर शिशुपाल सिंह भी अपने गाँव से राजा से मिलने के लिए गया।

शिशुपाल सिंह अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर राजा से धन की सहायता पाने के लिए भरत सिंह से पहले ही राजधानी पहुँच गया और अपने एक सुपरिचित कोषाधिकारी से मुलाक़ात की।

"जी हाँ, आपका कहना बिलकुल सच है।मेरा यही विचार है।" शिशुपाल ने चट से कह दिया।

"तुमने सच्ची बात बता दी। इसीलिए मैं तुम्हें एक अच्छी सलाह देता हूँ। सबको विदित है कि हमारे राजा अत्यन्त दयालु हैं। लेकिन उनके सोचने का ढंग कुछ और होता है। उनका यह सिद्धान्त है कि लोग जितना मांगते हैं, उतना पूरा नहीं देना चाहिए। यदि तुम पांच लाख सिक्के पाना चाहते हो तो उनसे बारह लाख मांगो। तब जाकर तुमको छः लाख सिक्के प्राप्त होंगे।"

"मैं छः लाख सिक्के नहीं चाहता। मेरे लिए तो पांच लाख ही पर्याप्त हैं। इसलिए मैं राजा से दस लाख सिक्के ही माँगूँगा।" शिशुपाल ने कहा।

"तुम छः लाख पाने का उपाय करो। तब एक लाख सिक्के बच जायेंगे। हम उसे आधा-आधा बांट लेंगे।" कोषाधिकारी ने सुझाया।

शिशुपाल ने खुशी के साथ कोषाधिकारी की बात मान ली। कोषाधिकारी ने उसे एक हफ़्ता राजधानी में ठहरने की सलाह दी।

इस बीच भरत सिंह भी राजधानी में पहुँचा। यह समाचार मिलते ही शिशुपाल सिंह के मन में तरह-तरह के विचार पैदा होने लगे। वह तो खुद गाँव में एक उद्योग स्थापित करने के विचार से आया है, इसलिए इस उद्योग से ज़्यादातर लाभ उसी को पहुँचेगा। भरत सिंह का काम

कोषाधिकारी ने शिशुपाल सिंह की सारी बातें शान्ति से सुन लीं और फिर पूछा— "तुम सच-सच बतलाओ ! इतने वर्षों के बाद आज अचानक अपने गाँव में नारियल के रेशे का उद्योग शुरू करने का विचार तुम्हारे दिमाग में कैसे आया ?"

"मेरे तो नारियल के कई बगीचे हैं। उनका सारा रेशा व्यर्थ जा रहा है। अगर गाँव में कोई रेशे का उद्योग हो तो मैं अपने रेशों को अच्छे दाम पर बेच सकता हूँ।" शिशुपाल ने जवाब दिया।

"यह उद्योग भी तुम्हीं शुरू करके और ज्यादा लाभ पाना चाहते हो न ?" कोषाधिकारी ने पूछा।

गाँव के सभी लोगों को हित पहुँचाने वाला है। इस कारण उससे अधिक यश भरत सिंह को प्राप्त को जायेगा। इसलिए उसको अधिक यश प्रप्त होने से रोकने के लिए उसे गलत रास्ते पर ले जाना होगा।

यों विचार करके शिशुपाल सिंह भरत सिंह से मिल कर बोला— "भाई! तुम तो हमारे पड़ोसी गाँव के हो, इसलिए मैं तुम्हें सच्चा रहस्य बता देता हूँ। मुझे मालूम हुआ है कि राजा बड़ी रक़म मांगने वालों से खीझते हैं और ऐसे लोगों पर नाराज़ भी हो जाते हैं। यह भी सुना है कि जो लोग उनसे कम रक़म मांगते हैं, उनको वे दुगुना दे देते हैं। तुम अपने काम के लिए एक लाख सिक्के मांग लो। वे तुम्हें दो लाख सिक्के दे देंगे। इससे गाँव में खंदक आदि की खुदवाई का खर्चा निकाल कर तुम्हें पचास हजार सिक्के बच भी जायेंगे।"

पर भरत सिंह ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह मौन रह गया। शिशुपाल सिंह की सलाह तो उसे पसंद नहीं आई। पर राजा से धन मांगते वक्त उस की सलाह का पालन करने का उसने अवश्य निश्चय किया।

चार दिन बाद राजा ने अनेक गाँवों से राजधानी में आये हुए सभी ग्रामाधिकारियों को अपने दरबार में बुला भेजा और अपनी अपनी आवश्यकता बताने का उन्हें आदेश दिया।

ग्रामाधिकारी एक-एक करके अपनी आवश्यकताएँ बता रहे थे। राजा उनकी मांग की रक़म में से आधा धन ही मंजूर कर रहे थे। भरत सिंह बड़े ही मनोयोग के साथ उसे परख

"प्रभु ! हमारा गाँव वैसे कोई छोटा नहीं है; फिर भी हम लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूर्ण रूप से राजा पर निर्भर रहना नहीं चाहते । वास्तव में हमें भी एक लाख पचास हजार सिक्के चाहिये, पर हम सब ग्रामवासी अपना काम पूरा करने के लिए श्रमदान करेंगे। ऐसी हालत में एक लाख सिक्कों में काम पूरा हो जायेगा। लेकिन उसमें से आधी रक़म हम लोग स्वयं चन्दा के रूप में जमा करेंगे। इन्हीं कारणों से मैंने आपसे मात्र पचास हजार सिक्कों की मांग की।" भरत सिंह ने समझाया ।

भरत सिंह की बातें सुनकर राजा बहुत खुश हुए और बोले— "तुम्हारा गाँव एक आदर्श गाँव है। तुम सबके लिए आदर्श बनने योग्य अधिकारी हो। मैं तुम्हारे गाँव के लिए दो लाख सिक्के मंजूर करता हूँ ।"

इसके बाद राजा ने शेष ग्रामाधिकारियों से कहा— "मैंने तुम्हारे गाँवों के सम्बन्ध में अपने विचार बदल दिये हैं। फिलहाल तुम लोगों को मैं धन नहीं देना चाहता । मैंने तुम लोगों की आवश्यकताओं के बारे में सुन लिया । कुछ दिनों के बाद मैं तुम्हारे गाँवों में एक अधिकारी को भेज दूँगा। वही तुम्हारी आवश्यकताओं के बारे में निर्णय लेगा । तब मैं तुम्हारी सहायता करने का प्रयत्न करूँगा। पर तुम लोग एक बात याद रखो। भविष्य में मैं तुम्हें जो धन सहायता के रूप में दूँगा, वह उधार के रूप में होगा।

रहा था ।

भरत सिंह से पहले एक गाँव के अधिकारी ने अपने गांव के चतुर्दिक खंदक खुदवाने लिए राजा से तीन लाख सिक्के मांगे । पर राजा ने उसको एक लाख पचास हज़ार सिक्के मात्र दिये।

जब भरत सिंह की बारी आई तब उसने राजा से निवेदन किया— "महाराज ! मेरे गाँव के चारों तरफ़ खंदक खुदवाना है। मुझे पचास हजार सिक्के दिलवा दीजिए ।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा— "अभी-अभी मैंने एक गाँव में खंदक खुदवाने के लिए एक लाख पचास हजार सिक्के मंजूर किये। तुम इतनी कम रक़म कैसे मांगते हो ? क्या तुम्हारा गाँव छोटा है ?"

उसके पूरा होने तक गाँववासियों को प्रति वर्ष एक सौ सिक्के अतिरिक्त कर के रूप में चुकाना होगा ।''

यह जवाब सुनकर सब ग्रामधिकारी हाहाकार कर उठे । राजा ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया । वे सिंहासन से उतर कर अपने महल में चले गये ।

बेताल ने यह कहानी सुना कर पूछा— ''राजन, धर्मदाता के रूप में प्रसिद्ध राजा का यह व्यवहार आप को क्या अस्वाभाविक प्रतीत नहीं होता ? रामपुर के अधिकारी भरत सिंह को दो लाख सिक्के दान के रूप में देने वाले राजा ने दूसरों को उधार के रूप में भी सिक्के नहीं दिये ! क्या यह उनकी कंजूसी को प्रमाणित करता है ? दर असल राजा के व्यवहार में जो यह अचानक परिवर्तन आया, इसका कारण क्या है ? उन्होंने अपना विचार क्यों बदल लिया । इस संदेह का समाधान जानते हुए भी नहीं देंगे तो आपका सर फूट कर टुकडे-टुकड़े हो जाएगा ।''

इस पर विक्रम बोले— ''राजा के अन्दर अचानक यह जो परिवर्तन हुआ, यह उनकी कंजूसी की वज़ह से नहीं; बल्कि इस कारण से कि भरत सिंह के उत्तर से राजा ने एक ख़ास बात समझ ली । वह यह कि अनेक गाँवों के अधिकारी अपने गाँवों की आवश्यकताओं से अधिक धन अपने स्वार्थ के लिए ले जा रहे थे । भरत सिंह का जवाब सुनकर राजा ने इस समस्या पर पुनः विचार किया । इस कारण से राजा को देश की सारी जनता पर अधिक कर का भार डालना पड़ रहा था । ऐसा न होकर भरत सिंह की योजना के अनुसार प्रत्येक गाँव के लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कुछ हद तक स्वयं कर सकें तो राजा सारे देश की उन्नति के लिए आवश्यक योजनाएँ तैयार कर सकते थे । यह बात अन्य ग्रामाधिकारियों के दिमाग में बिठाने के लिए ही राजा ने धन की सहायता पाने के लिए ऐसी ज़टिल शर्तें रखीं ।''

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पुनः पेड़ पर जा बैठा !

कल्पित

अंगरक्षक

चन्दन पुर के राजा के लिए एक नये अंगरक्षक की आवश्यकता थी। इस पद के लिए जो उम्मीदवार आये, उनमें से चार व्यक्ति योग्य समझे गये। वे चारों साहस और पराक्रम में समान थे, लेकिन मंत्री ने उनमें से एक ऐसे व्यक्ति का चुनाव करना चाहा जो सबसे ज़्यादा चुस्त और कार्य-दक्ष हो।

मंत्री ने उनके सामने एक छोटी-सी परीक्षा रखी। उन्होंने पूछा— "राजा साहेब अपने परिवार के साथ शिकार खेलते हुए रास्ता भटक गये हैं! उस समय राजा साहब वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे हैं! मान लो वहां तुम में से कोई एक मौजूद है, तब अचानक एक बाघ ने आप लोगों पर हमला कर दिया। ऐसी हालत में तुम लोग क्या करोगे?"

"मैं भयंकर गर्जन करते हुए बाघ का सामना करूंगा।" उनमें से एक ने कहा। दूसरे ने कहा— "मैं अपनी तलवार खींच कर झट उस बाघ के पीछे जाऊंगा और उस पर बार करूंगा।" तीसरे ने कहा— "मैं बाघ और राजा के बीच खड़े होकर कुछ ही क्षणों में उसको मार डालूंगा।"

चौथा मंत्री का प्रश्न सुनकर मंद हास करके बोला— "मेरे रहते राजा पर अचानक बाघ हमला नहीं कर सकता! उनके विश्राम करते समय मैं चौकन्ना हो चारों तरफ़ देखते हुए पहरा देता रहूंगा!"

मंत्री ने इस चौथे युवक को राजा के अंग-रक्षक के रूप में नियुक्त कर लिया!

ईंट का जवाब पत्थर

एक बार एक जमींदार साहेब ने अपने सारे दरबारियों की ओर दृष्टिपात करके यह घोषणा की— "जो आदमी यह बताएगा कि इस संसार के सभी अनर्थों का मूल कारण क्या है, उसको मैं सौ स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार में दूँगा।"

किसी ने सभी अनर्थों का मूल गर्व को बताया तो किसी ने अहंकार को। किसी और ने अज्ञान को बताया। इस प्रकार सब ने अपने-अपने ढंग से जवाब दिये। पर जमींदार को इनमें से किसी का उत्तर पसन्द न आया।

इस पर रघुनाथ नामक व्यक्ति ने उठकर कहा— "साहब! इसका सही उत्तर मैं जानता हूँ। पर पुरस्कार की राशि अत्यन्त थोड़ी है! इसीलिए मैं आपके प्रश्न का समाधान करने में संकोच कर रहा हूँ।"

जमींदार ने चट पुरस्कार की राशि बढ़ा कर कहा— "मेरे मन को सही लगने वाले उत्तर पर मैं दो सौ स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार में दूँगा।"

इस पर रघुनाथ ने कहा— "इस संसार के सारे अनर्थों की जड़ धन है।" आगे सविस्तार बताते हुए उसने कहा कि धन के वास्ते इस संसार में किस प्रकार अन्याय, अत्याचार, हत्याएँ तथा युद्ध हुए हैं।

जमींदार ने रघुनाथ के सारे तर्क सुनकर कहा— "तुम्हारे उत्तर से मैं प्रभावित हुआ हूँ या नहीं, यह एक अलग बात है। पर तुमने इन अनर्थों की पुष्टि में जो कहानियाँ सुनाईं, वे मुझको जरूर पसन्द आईं। तुम एक महान कथाकार हो।" यह कह कर जमींदार ने उसको दो सौ स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार में दे दीं।

उस दरबार में कुत्सित नामक एक व्यक्ति था। उसका वास्तविक नाम कोई नहीं जानता था, पर हर कोई उसको इसी नाम से पुकारता था। वह उठ खड़ा हुआ और सबका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता हुआ बोला— "रघुनाथ ने सबको ठगा है। उसने जब सब

रामलाल यादव

अनर्थों की जड़ धन को माना, तब उसने अपने उत्तर के पुरस्कार के रूप में धन को क्यों स्वीकार किया ? बल्कि और भी अधिक धन की मांग की। इसका मतलब है कि स्वयं अपने उत्तर पर उसे विश्वास नहीं है। वह जिस बात पर स्वयं विश्वास नहीं करता, उस पर हम सबके द्वारा विश्वास कराने का प्रयत्न करना धोखा और दगा नहीं तो और क्या है ?"

इस पर जमींदार ने रघुनाथ से पूछा— "तुम इस बात का क्या जवाब देते हो ?"

"मनुष्य यह जानते हुए भी कि धन अनर्थों की जड़ है, धन की कामना करता है। इसीलिए वह और अनर्थकारी साबित हो रहा है।" रघुनाथ ने उत्तर दिया।

यह समाधान सुनकर केवल कुत्सित को छोड़कर बाकी सबने तालियाँ बजाईं। कुत्सित ने रघुनाथ से पूछा— "धन को अनर्थ मानकर भी जो धन की कामना करता है, वह मूर्ख कहलाता है। इसीलिए क्या तुम मूर्ख हो !"

रघुनाथ ने कुत्सित की ओर गहरी नज़र से देखते हुए पूछा— "क्या तुम अपनी ज़िन्दगी को शाश्वत मानते हो ?"

"कदापि नहीं !" कुत्सित ने जवाब दिया।

"यह बताओ, तुम्हारी मौत तुम्हारी जानकारी में होगी या अनजाने में ?" रघुनाथ ने फिर पूछा।

"सब की मौत अनजाने में ही होती है।" कुत्सित ने नाराज़ होकर कहा।

"तब तो तुम और थोड़े दिन ज़िन्दा रहना चाहते हो या मरना चाहते हो ?" रघुनाथ ने पूछा !

"तुम बताओ, तुम क्या करना चाहते हो ?" कुत्सित ने उलटा सवाल किया।

"मैं तो मूर्ख हूँ। इसलिए ज़िन्दा रहना चाहता हूँ; लेकिन मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहता हूँ।" रघुनाथ ने व्यंग्य कसा।

इस पर सभी दरबारी हंस पड़े। तब अपमानित होकर कुत्सित ने अपना सर झुका लिया। इसके बाद जमींदार ने बड़ी शान के साथ रघुनाथ का सम्मान किया।

वक्र बुद्धि

एक बार ब्रह्मदत्त काशी नगर पर राज्य कर रहे थे। उन के समय में एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। उसने वेदभं नामक महा मंत्र की सिद्धि प्राप्त की थी।

सभी ग्रहों के कूट के समय आकाश की ओर देखते हुए इस मंत्र का आवाहन करने पर आसमान से सीधे सोना, चांदी, मोती, प्रवाल, रत्न, माणिक और नील-इन सात प्रकार की वस्तुओं की वर्षा हो सकती थी।

मंत्र-सिद्धि प्राप्त उस ब्राह्मण के आश्रय में जाकर बोधिसत्व उसका प्रिय शिष्य बन गया। एक दिन अपने शिष्य को साथ लेकर गुरु जंगल की ओर चल पड़ा।

उस जंगल में पांच सौ डाकू थे। उन डाकुओं ने गुरु और शिष्य को रोका। उन डाकुओं का एक विचित्र नियम था। यदि दो यात्री एक साथ उस रास्ते से गुजरते तो उन में से एक को यह मौक़ा दिया जाता कि वह घर जाकर दण्ड-शुल्क ला करके अपने सह-यात्री को छुड़ा ले जाये।

अगर वे यात्री पिता और पुत्र हों तो पिता को यह मौक़ा दिया जाता था कि वह घर जाकर दण्ड-शुल्क ले आये और उसे चुका कर अपने पुत्र को छुड़ा ले जाये।

इसी प्रकार अगर मां-बेटी हों तो मां को, भाई-भाई हों तो उनमें से एक को और यदि गुरु व शिष्य हों तो शिष्य को-इस प्रकार एक को छोड़ने की उनकी परिपाटी थी।

उस दिन उन विचित्र डाकुओं ने ब्राह्मण को अपने यहाँ रोक कर उसके शिष्य को घर जाकर शुल्क लाने के लिए भेज दिया। वहाँ से निकलते वक्त बोधिसत्व ने अपने गुरु को प्रणाम किया और समझाया— "गुरु जी ! आप चिन्ता न कीजिये। मैं एक-दो दिन में अवश्य लौट आऊँगा। पर आपसे मेरा एक निवेदन है— आज सभी ग्रहों के कूट योग का दिन

है । आप कृपया किसी भी स्थिति में मंत्र जाप कर रत्नों की वर्षा भूल कर भी न कराइएगा । ऐसा करने पर आपकी और इन डाकुओं की भी अपार हानि होगी ।"

इस प्रकार कई बार अपने गुरु को सचेत कर बोधिसत्व वहां से चल पड़ा ।

सूर्यास्त हो गया था । डाकुओं ने ब्राह्मण को पकड़ रखा था । पूर्णिमा का चांद अपनी शुभ्र ज्योत्स्ना बिखेरते हुए आसमान में दमक रहा था । ब्राह्मण ने आसमान की ओर देख कर भांप लिया कि ग्रहों के कूट का समय निकट आ गया है ।

वह सोचने लगा— "मैं डाकुओं के हाथों पड़ कर एक असमर्थ व्यक्ति की भांति क्यों इन लोगों के द्वारा यातनाएं झेलूँ ? स्वयं अपने मंत्र का पठन करके कनक-वर्षा करवाकर डाकुओं का शुल्क अदा कर मुक्त हो सकता हूँ । इस तरह मैं आजाद होकर सुखी हो सकता हूँ । आख़िर प्राण-संकट के समय अपनी विद्या का उपयोग न करूँ तो उस विद्या का प्रयोजन ही क्या है ? न मालूम मेरे शिष्य को धन प्राप्त करने में समय लग जाए या उसे कष्ट उठाना पड़े ।

यह सोच कर ब्राह्मण ने डाकुओं के दल को अपने समीप बुलवाया ।

उनसे पूछा— "तुम लोगों ने मुझ को क्यों बन्दी बनाया है ?"

"महानुभाव ! और किसलिए ? सिर्फ़ धन पाने के लिए ही !" डाकुओं ने एक स्वर में उत्तर दिया ।

"बस ! यही बात है न ! तब तो मेरे कहे अनुसार करो ! तुम लोग जितना धन चाहते हो, मैं दे दूँगा । पहले मेरे बन्धन खोल दो । फिर मुझको स्नान करा दो । नये वस्त्र धारण करवा दो । सभी प्रकार के फूल लाकर यहाँ पर ढेर लगा दो । मेरे चारों तरफ़ सुगंधित द्रव्य, धूप, दीप आदि रख दो । तब तमाशा देखो ! क्या होने वाला है ?"

ब्राह्मण ने डाकुओं को समझाते हुए बताया ।

डाकुओं ने ब्राह्मण के आदेश का पालन किया । इसके बाद ब्राह्मण ने समय का अन्दाज़ा लगा कर आसमान की ओर दृष्टि केन्द्रित की और ध्यान पूर्वक वेदभं मंत्र का पाठ करना

प्रारम्भ किया ।

थोड़ी ही देर में मूल्यवान रत्न और सोने व चांदी आदि की वर्षा होने लगी। डाकुओं ने ताबड़-तोड़ उन रत्नों को इकट्ठा करके गठरी बांध ली और अपने रास्ते चल दिये। उनके पीछे-पीछे ब्राह्मण भी चलने लगा।

उस समय बीच मार्ग में ही डाकुओं का एक और दल आ धमका और प्रथम दल पर हमला बोल दिया।

प्रथम दल के डाकुओं ने पूछा— "तुम लोग हमें क्यों पकड़ना चाहते हो ?"

दूसरे दल ने कहा— "और किसलिए ? धन के वास्ते ही !"

"बस ! तब तो तुम लोग इस ब्राह्मण के आश्रय में जाओ ! ये आसमान की तरफ़ देख लें, तो बस क़ीमती मणि-मानिकों की वर्षा हो जाएगी। इसी प्रकार से ही उन्होंने हमें यह सारा धन दिया है !" यों कहकर वे लोग खिसक गये।

डाकुओं के दूसरे दल ने ब्राह्मण को पकड़ लिया। उस दल ने ब्राह्मण को सताते हुए पूछा— "हमें भी धन दे दो ! ब्राह्मण ! वरना तुम्हारे प्राणों की खैर नहीं है ! तुम बचने के लिए कोई बहाना करोगे, तो भी हम तुम को छोड़ने वाले नहीं हैं ! इसी लिए तुम व्यर्थ ही समय का दुरुपयोग न करके रत्नों की वर्षा करा दो। हम को मालामाल बना कर तुम भी जीवित बच जाओ।"

इस पर ब्राह्मण ने कहा— "भाइयो ! इसके पहले मैंने उन डाकुओं को जो धन दिया था, वह मंत्र की महिमा से प्राप्त किया हुआ धन था। मैंने तो जो मंत्र सीखा है, वह फिर ठीक अब से एक साल बाद ही काम दे सकता है ! मैं अपनी इच्छा के अनुसार अब अगर जाप भी करूँ तो यह मंत्र काम देने वाला नहीं है। इसके लिए ग्रह कूट का योग परम आवश्यक है। एक वर्ष बाद फिर ग्रहों का कूट होगा। उसी समय मेरा मंत्र काम देगा। मैं अवश्य ही जाप करके उस समय तुम लोगों के वास्ते कनक-वर्षा करवा दूँगा !"

पर डाकुओं ने ब्राह्मण की बातों पर विश्वास नहीं किया। बल्कि वे धमकी देते हुए बोले—

"तुमने हमसे पहले आये हुए लोगों को धन कुबेर बनाकर भेज दिया है ! हमारे मांगने पर तुम हमको एक साल तक इन्तज़ार करने को कहते हो ?" यों कह कर उन लोगों ने तेज धारवाली छुरी लेकर ब्राह्मण को दो टुकड़ों में चीर डाला और उसकी लाश को उलटा करके मार्ग-मध्य में लटका दिया ।

इसके बाद वे लोग दौड़ कर डाकुओं के प्रथम दल से मिले और उन सबको मार कर सारी सम्पत्ति हड़प ली । पर सम्पत्ति के बंटवारे में उनके बीच आपस में मतभेद पैदा हो गया । उनके बीच दो दल बन गये । धन को लेकर दोनों दल परस्पर झगड़ पड़े ।

उस युद्ध में सौ लोग आपस में लड़ मरे और अन्त में केवल दो ही आदमी बचे रहे । उन दोनों ने सारी सम्पत्ति ले जाकर समीप के एक जंगल में छिपा दी ।

उनमें से एक आदमी तलवार लेकर उस सम्पत्ति पर पहरा देने लगा और दूसरा व्यक्ति खाने-पीने की सामग्री जुटाने के लिए समीप के गांव में चला गया ।

अपार धन संपत्ति के अनायास ही हाथ लगते ही उन दोनों के दिल बदल गये । उनके भीतर जो स्वार्थ छिपा हुआ था, वह उभर आया। धन आदमी को अन्धा बना देता है । धन को देखते ही बड़े से बड़े लोग भी अपने विवेक को खो बैठते हैं । ऐसी हालत में उन डाकुओं की बात क्या कहना है !

धन पर पहरा देने वाला डाकू अपने मन में सोचने लगा— "मेरा साथी आ जाएगा तो व्यर्थ ही इस सम्पत्ति में से आधा धन बांट कर ले जाएगा !"

यह विचार कर वह मन ही मन दुखी हो गया ।

उधर जो डाकू खाने की सामग्री लाने गया था, वह भी अपने मन में यों सोचने लगा— "यदि मेरा साथी मर जाए तो यह सारी सम्पत्ति मेरी हो जाएगी और मैं धन-कुबेर बन सकता हूँ !"

यों विचारकर अपने हिस्से के भोजन को अलग करके बाकी पदार्थों में उसने जहर मिला दिया ।

वह डाकू अपने साथी के लिए भोजन-सामग्री लेकर जैसे ही वहाँ पहुँचा, पहरा देने वाले डाकू ने झट से तलवार खींच कर उसका सर काट डाला और उसके कलेवर को दूर फेंक दिया ।

लेकिन थोड़ी देर बाद जहर मिला हुआ खाना खाकर उसने भी अपना दम तोड़ दिया ।

इस प्रकार ब्राह्मण और उसके धन को प्राप्त करने वाले सभी डाकू अपनी जान गंवा बैठे ।

एक-दो दिन बाद बोधिसत्व डाकुओं को चुकाने के लिए दण्ड-शुल्क लेकर वहाँ पर आ पहुँचा ।

उसने अपने गुरु की खोज की; पर उनका कहीं पता न चला । सब ओर धन और सड़ी हुई लाशें ही इधर-उधर फैली हुई थीं । उन्हें देख कर बोधिसत्व ने अपने मन में सोचा— "इस ब्राह्मण ने मेरी सलाह की उपेक्षा की और अपने मन की कर ही डाली । परसों इस ब्राह्मण ने मंत्र-जाप कर रत्नों की वर्षा करवा दी होगी । उसी के फलस्वरूप अवश्य ही ये लोग अपने प्राणों से हाथ धो बैठे होंगे !"

यों विचार करके वह आगे बढ़ता गया ।

थोड़ी दूर जाने के बाद उसे अपने गुरु का कलेवर दिखाई दिया । वह व्याकुल होकर अपने मन ही मन कहने लगा— "उफ़ ! मेरे गुरु जी ! आपने मेरी बात नहीं मानी । आपकी यह कैसी दुर्गति हो गई है ।"

इसके बाद घास-फूस लाकर उसने अपने

गुरु का दाह-संस्कार सम्पन्न किया तथा जंगल से फूल ला उस स्थान पर रखकर उनकी भस्मी को भक्तिपूर्वक प्रणाम किया !

वहाँ से थोड़ी दूर और जाने पर उसे प्रथम दल के डाकुओं के शव दिखाई पड़े ।

थोड़ी दूर और आगे बढ़ा तो दूसरे दल के डाकुओं की लाशें भी बिखरी पड़ी थीं ।

दो शवों को छोड़ कर बोधिसत्व को शेष सारे लोगों के कलेवर दिखाई दिये । इस पर वह सोचने लगा— "वे दोनों बच कर कहाँ निकल गये ?"

धन लूटने के बाद वे जिस रास्ते से निकल गये थे, उसका पता लगा कर बोधिसत्व उसी मार्ग पर आगे बढ़ा ! आख़िर वह एक घने

जंगल के बीच पहुँचा। एक स्थान पर उसे धन की गठरियाँ दिखाई दीं। उनके समीप ही, बचकर भाग गये डाकुओं में से एक का कलेवर पड़ा हुआ था।

उसके समीप ही भोजन-सामग्री वाला पात्र रखा हुआ था। इस आधार पर बोधिसत्व ने असली बात भांप ली। चार क़दम आगे बढ़ने पर एक और डाकू की लाश दिखाई दी। इन निशानों के आधार पर बोधिसत्व ने स्वतः ही सारा हाल जान लिया।

इस दर्दनाक दृश्य को देख बोधिसत्व अत्यन्त दुखी हो उठा।

वह विचार करने लगा— "गुरु जी ने मेरी बात नहीं मानी। मैंने उनको अनेक प्रकार से समझाया। फिर भी मेरी सलाह पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने अहं-बुद्धि को सुखकर माना! इसके परिणाम-स्वरूप वे तो मृत्यु को प्राप्त हुए ही, साथ ही अनेक लोगों की मृत्यु के कारण भी बन गए। जो लोग अन्य लोगों की सलाह पर विचार किये बिना स्वयं गलत निर्णय कर डालते हैं, उनकी ऐसी ही दुर्गति हो जाती है!

"मेरे गुरु जी ने अपने मंत्र की महिमा के द्वारा जिस सम्पत्ति को पृथ्वी लोक में पहुँचा दिया, वह मानव-कल्याण के काम न आ सकी, उल्टे भीषण-कांड एवं विनाश का कारण ही बन गई। इसलिए जब बुद्धि वक्र गति से चलने लगती है, तब उत्तम वस्तुओं के द्वारा भी हानि हो जाती है। इसका दोष उन वस्तुओं में नहीं है, बल्कि मानव-स्वभाव के अन्दर है। सच्ची बात तो यह है कि वक्र-बुद्धि अग्नि-ज्वाला जैसी है। वह एक का विनाश करके ही नहीं छोड़ती, अनेक लोगों का सर्वनाश करके ही शीतल होती है!

इस सत्य का प्रबोध बोधिसत्व ने उच्च स्वर में किया। उसकी ध्वनि सारे जंगल में गूंज उठी। बोधिसत्व के प्रबोध को सुनकर वन-देवियों ने प्रसन्न होकर उसका जय-जयकार किया!

इसके बाद बोधिसत्व उस सारी सम्पत्ति को अपने आश्रम में ले गया और उसे लोक-कल्याणकारी कार्यों में लगा दिया!

तात्या टोपे
कुंवर सिंह

सिपाही विद्रोह में हमें तात्या टोपे ने अपूर्व धैर्य-साहस और युद्ध-कौशल का परिचय दिया। सनातन धर्म का आचरण करने वाले एक परिवार में जन्म लेकर नाना साहेब के दरबार में वे गुमाशता बने। अपने मालिक के अधिकारों की रक्षा के लिये तात्या टोपे ने आयुध धारण किया।

साधारण व्यक्ति को भी एक कुशल सैनिक के रूप में बदलने की अद्भुत सामर्थ्य उसके अन्दर थी।

एक बार उन्होंने ब्रिटिश सेना को बुरी तरह से पराजित कर कानपुर से कई मील तक उन्हें पीछे खदेड़ दिया। उस दिन सूर्यास्त हो जाने के कारण वे उस सेना का पीछा न कर सके। ब्रिटिश सेनापति ने अपनी दयनीय पराजय के बारे में भारत में स्थित ब्रिटिश प्रधान सेनाधिपति सर कोलिन कांबेल के पास समाचार भेजा।
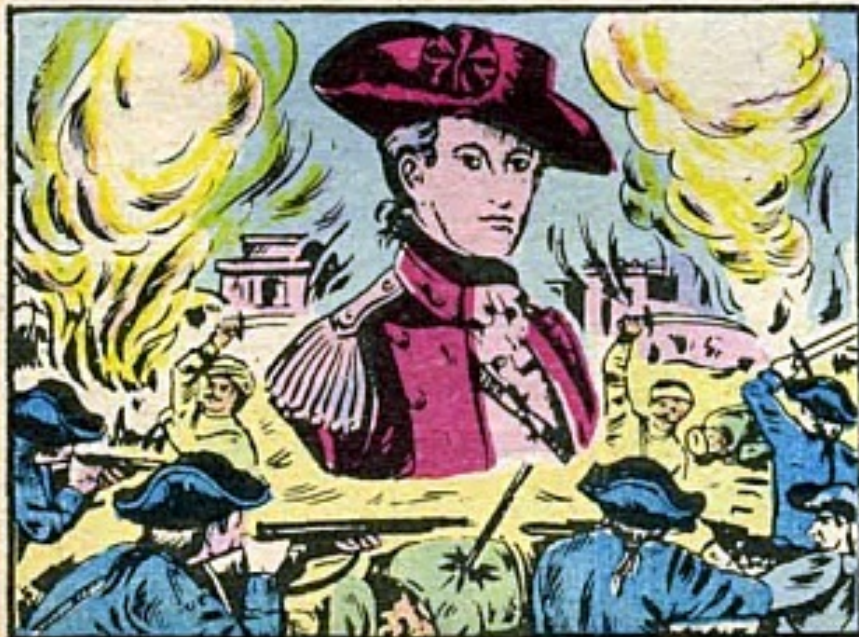
यह समाचार मिलते ही सर कोलिन कांबेल एक भारी सेना लेकर कानपुर पहुंचा। उस समय तात्या टोपे कालपि नगर में थे। उन्होंने कई बार सर कोलिन कांबेल का सामना करके भयंकर युद्ध किया। उनके साहस, पराक्रम एवं युद्ध-कुशलता ने ब्रिटिश वालों को चकित कर दिया।

एक बार तात्या टोपे अस्वस्थ हो गए। उस समय उन्होंने एक छोटे से राजा का आश्रय मांगा। उस राजा ने सादर उनका स्वागत किया। वे भारतीय शासकों की प्रतिष्ठा एवं स्वतंत्रता की रक्षा के लिये संग्राम कर रहे थे। इसलिए उन्होंने सोचा कि उनसे भारतीय राजाओं में से कोई भी उनका अपकार कभी सोच नहीं सकता।

पर तात्या टोपे को आश्रय देने वाला राजा दुष्ट था। उसने गुप्त रूप से ब्रिटिशवालों को यह समाचार भेज दिया कि तात्या टोपे उसके यहां विश्राम कर रहे हैं। एक दिन तात्या टोपे उद्यान वन में विश्राम कर रहे थे। तभी ब्रिटिश सैनिक मालियों के छद्म वेश में आये और उनको घेर कर बन्दी बना लिया।

तात्या टोपे ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करते हुए ये शब्द कहे थे— "मेरी सुनवाई करने का अधिकार तुम लोगों को नहीं है। मैं ब्रिटिश शासन के अधीन रहने वाला व्यक्ति नहीं हूं। किसी के घर में घुस आया डाकू उस घर के मालिक को पकड़ कर न्याय और कानून के नाम पर उसकी सुनवाई ले तो यह न्याय और व्यवस्था की अवहेलना करना है।"

तात्या टोपे को फांसी के तख़्ते पर चढ़ाने का समाचार मिलते ही नाना साहेब असहनीय दुख से भर उठे। फिर भी उस हालत में उन्होंने ब्रिटिश सेना का सामना किया। अन्त में उन्हें आत्म-रक्षा के लिए नेपाल के जंगलों में छिपना पड़ा। उन्हें बन्दी बनाने का अंग्रेजों ने अनेक प्रकार से प्रयत्न किया। पर वे उसमें सफल न हुए।

सिपाही विद्रोह में भाग लेने वाले एक और पराक्रमी वीर बिहार के जगदीश पुर के शासक राजा कुंवर सिंह थे। ७५ वर्ष की आयु में भी उन्होंने शस्त्र धारण करके युद्ध किया। उन्होंने अपने सैनिकों को गोरिल्ला युद्ध में प्रशिक्षण दिया। वृक्षों पर से, झाड़ियों के पीछे से उनके सैनिकों ने ब्रिटिश सेना के साथ संग्राम किया।

कुंवर सिंह ने बिजली जैसे घोड़े पर सवार हो युवा वीर की तरह युद्ध किया। एक बार ब्रिटिश सेना की गोली कुंवर सिंह के दायें हाथ पर आ लगी। फिर भी उन्होंने उस घायल हाथ से घोड़े पर नियंत्रण रखते हुए बायें हाथ से तलवार चलाते हुए शत्रु सेना के छक्के छुड़ा दिये।

कुछ दिन बाद कुंवर सिंह ने समझ लिया कि उनके घायल हाथ के घावों से जहर सारे शरीर में फैलता जा रहा है। इस पर उन्होंने गंगा के किनारे खड़े होकर बायें हाथ में तलवार ले दायें हाथ को काटकर गंगा मैया को भेंट कर दिया।

इस घटना के थोड़ी देर बाद वे बेहोश होकर गिर पड़े और दूसरे दिन स्वर्गवासी हो गये। उनके बाद उनके छोटे भाई, अमर सिंह ने उसकी सेना का नेतृत्व किया।
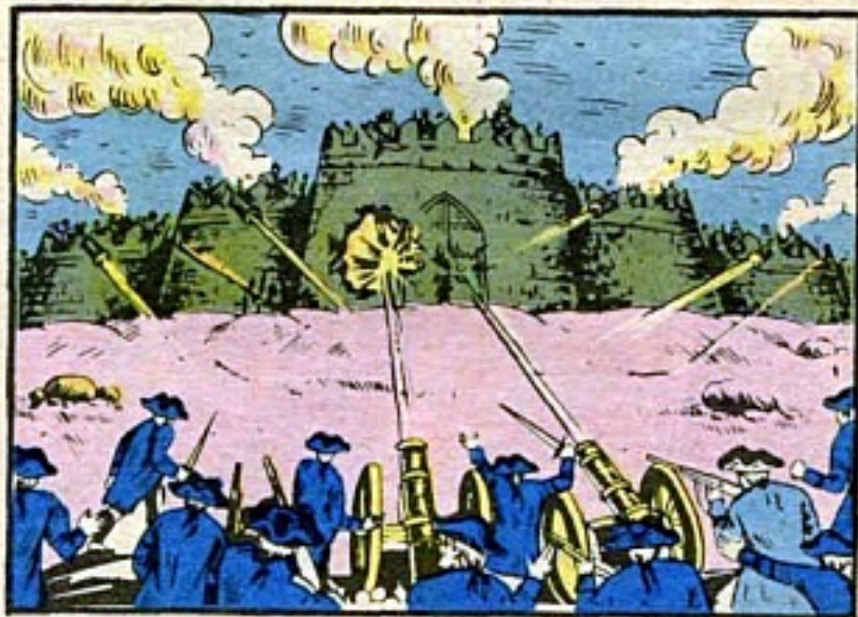
जगदीश पुर के राज महल की नारियां तोपों के आगे खड़ी हो गईं और उनमें आग लगाकर अपने प्राणों की आहुति दे दी। पर अमर सिंह वहां से भाग निकले। इसके बाद ही सिपाही-विद्रोह की चिनगारी धीरे-धीरे बुझने लगी।

दुष्ट की दावत

शिराज नगर की सीमा में अली नामक एक व्यक्ति रहा करता था। उसके बाप-दादा बहुत अमीर थे। लेकिन अली जब तक पल-बढ़कर जवान हुआ उसका बाप व्यापार में अपनी सारी सम्पत्ति खो बैठा। ऐसी हालत में अली के पास अब सिर्फ़ उजड़ा हुआ एक महल और उसके पार्श्व में स्थित एक छोटा-सा मकान बच रहा।

अली बचपन में कुछ पढ़-लिख नहीं पाया था और न वह व्यापार के तौर-तरीके जानता था साथ ही कोई न कोई धंधा चलाने केलिए उस के पास पर्याप्त संपत्ति थी। इसलिए उसे अपने बाप के द्वारा छोड़ी गयी संपत्ति पर निर्भर रहना पड़ा।

अली अपने बाप के द्वारा बचा कर रखे गये उसी पुराने महल में निवास करता था। बाजू के मकान में रहने वाले उसे हर महीने किराया चुकाया करते थे।

पर अली किराये की वह रकम खर्च नहीं करता था। वह उस रकम को पत्थर के एक बर्तन में रखकर उसको अपने महल के आंगन के एक कोने में स्थित उजड़े हुए कुएं के पास गाड़ कर रख देता था।

इसका कारण यह था कि अली जिस महल में रहता था उसमें किवाड़ तक नहीं थे, क्योंकि कर्ज़ देने वाले उन्हें उखाड़ कर कभी के अपने साथ ले गये थे।

अली के महल से थोड़ी दूर पर एक झोंपड़ी थी, जिसमें एक आलसी रहा करता था। वह बड़ा दुष्ट था। वह प्रकट रूप से अली के प्रति दोस्ती का अभिनय करते हुए यह जानने की कोशिश करने लगा कि अली अपना धन कहाँ छिपा कर रख रहा है।

इस प्रयत्न में कई दिन बीत गये। एक दिन वह गुप्त स्थान में छिप गया और अली को एक पत्थर के बर्तन में धन रख कर गड्ढे में गाड़ते

देख लिया ।

एक दिन रात को जब अली सो रहा था, वह दुष्ट पत्थर के बर्तन को निकाल कर अपनी झोंपड़ी में चला गया । उसमें से उसे चांदी के साठ सिक्के मिले ।

दूसरे दिन अली किराये में प्राप्त चांदी के पांच सिक्के लेकर पत्थर के बर्तन में छिपाने गया, लेकिन खोद कर देखने पर वहाँ झारी न मिली । चट आलसी के प्रति उसके मन में संदेह हो गया ।

अली ने अपने महल के अहाते में टहलते वक्त कई बार आलसी को टूटी दीवार से झांकते देखा था । यह बात उसे याद आ गई । अली ने भांप लिया कि उसी दुष्ट ने उसके सिक्के हड़प लिये हैं ।

चांदी के साठ सिक्कों को बड़ी सरलता के साथ वह चुरा सका, इस बात से आलसी को बड़ा सन्तोष हुआ ।

पर अली उस पर शंका न करे, इस ख़्याल से वह प्रति दिन की भांति अली से बात-चीत करने चल पड़ा ।

अली ने खिड़की में से उसे निकट आते हुए देखा । दूसरे ही क्षण वह अपने पांच चांदी के सिक्कों को दरवाजे के आगे बिछा कर गली की तरफ़ पीठ किये बुदबुदाने लगा— "झारी के अन्दर चांदी के जो साठ सिक्के हैं, उनके साथ ये पांच सिक्के भी जोड़ दूँगा । यानी झारी के अन्दर पैंसठ सिक्के हो जायेंगे । ओह ! कैसी भारी रक़म है । यह रक़म मुझे आफ़त के वक्त काम दे सकती है !"

आलसी आदमी ने घर में प्रवेश करते हुए अली की बातें सुन लीं । पर उसकी बातों को अनसुनी करने का स्वांग रचकर मुस्कुराते हुए उसके समीप पहुँचा ।

अली ने उसको देखते ही अपने सिक्कों को अपनी पोशाक के अन्दर छिपा लिया ।

आलसी के मन में यह लालच पैदा हो गया कि उन पांच सिक्कों को भी हड़प लेना चाहिए । अगर वह झारी को कुएं के पास यथावत् गाड़ कर रख दे तो अली रात के वक्त जाकर ये पांच सिक्के भी उस झारी में डाल देगा । तब तीसरे दिन रात को जाकर वह कुल पैंसठ सिक्कों को हड़प सकता है ।

यह सोच कर वह मन ही मन बड़ा खुश हुआ।

लेकिन आलसी के सामने यह सवाल पैदा हुआ कि दिन के वक्त यथास्थान झारी को कैसे गाड़ कर रखा जाए। इसी बात पर विचार करते-करते आखिर उसे एक उपाय सूझ गया।

उस उजड़े हुए महल के अहाते में दिन के वक्त भी कोई प्रवेश नहीं करता। थोड़ी देर के लिए अगर अली को वहां से बाहर भेज दिया जाए तो वह झारी को कुएं के पास गाड़ कर रख सकता है।

यों विचार कर आलसी ने अली से कहा— "दोस्त ! सुनो, बहुत दिनों से मेरे मन में एक इच्छा है।"

"बताओ, वह कैसी इच्छा है ?" अली ने पूछा।

"यहीं कहीं पास के भोजनालय में मैं तुम्हें दावत देना चाहता हूँ ! आज रात को तुम फुरसत के साथ रहोगे न ?" आलसी ने अली से पूछा।

"यह तुम क्या कहते हो ? तुम जैसे दिली दोस्त दावत दें तो मेरे सामने फुरसत की कमी होगी क्या ?" अली ने उत्साह दिखाते हुए उत्तर दिया।

उस दिन रात को वे दोनों पूर्वनिश्चित भोजनालय के पास मिले। आलसी ने भोजनालय के मालिक को तरह-तरह के मांस और मिष्ठान्नों की सूची दी और उन्हें शीघ्र तैयार कराने का आदेश दिया।

उधर रसोई घर में ये सारे पदार्थ बनने लगे,

इधर आलसी ने मन्द स्वर में अली से कहा—"दोस्त ! मैं पैसे लाना भूल गया। अभी घर जाकर ले आता हूँ। मेरे लौटने तक तुम यहीं पर रहो कहीं मत जाओ, समझें !" यह कह कर वह वहां से चल पड़ा।

अली ने उसकी बात मान ली।

आलसी अपनी झोंपड़ी में पहुँचा। साठ चांदी के सिक्कों से भरी झारी लेकर अली के महल के प्रांगण में चला गया। वहाँ पर वह झारी को पुरानी जगह गाड़ कर जल्दी - जल्दी भोजनालय को लौट आया। वह मन ही मन खुश था। क्यों कि उसे बिना मेहनत के पांच और सिक्के आज हाथ लगने वाले थे।

दावत समाप्त हो गयी। अली यह सोच कर खुश था कि उसकी योजना सफल हो गई है और आलसी भी इस ख्याल से प्रसन्न था कि उसकी चाल अली ताड़ न सका।

अली ने भोजनालय से घर लौटते ही आलसी द्वारा गाड़ी गई झारी को खोद कर निकाला और उसको चुपचाप दूसरी जगह गाड़ करके उस रात निश्चिन्त होकर सो गया।

आलसी आदमी दूसरे दिन रात को अली के घर से झारी लाने के लिए निकल पड़ा। वह मन ही मन फूला न समा रहा था। इस वक़्त उस झारी के अन्दर चांदी के साठ सिक्के नहीं, पैंसठ सिक्के होंगे। इसके माने पहले से भी ज्यादा बोझ होगा।

आलसी उसी जगह पहुँच कर खोद रहा था, जहां पर उसने झारी छिपा कर रख दी थी। तभी उसके कानों में अली की हँसी सुनाई दी। उसने चौंक कर सर घुमा कर देखा। थोड़ी दूर पर खड़े हो अली खिल-खिला कर हंस रहा था।

"वाह ! मेरे प्यारे दोस्त ! तुम्हारी कैसी अद्भुत दावत है ? तुम्हें धन्यवाद देने के लिए यहाँ पर आया हूँ।" अली ने हंसते हुए कहा।

अली को वहां देखते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया। वह मन ही मन अत्यन्त लज्जित हुआ और सिक्कों को पाने के लिए जमीन खोदना छोड़ कर सिर पर पांव रख कर भागा और फिर कभी उसकी तरफ़ झांकने का नाम तक न लिया।

सत्या का बोध

वरदापुर नामक गाँव की सीमा पर ग्राम देवी का एक मन्दिर था। उस मन्दिर के नाम पर गाँव से बहुत सारी भूमि प्राप्त हुई थी। साथ ही मन्दिर में प्रतिस्थापित देवी के लिए बहुत सारे क़ीमती आभूषण भी थे। देवी के दर्शनार्थ प्रति दिन आने वाले भक्तों की भीड़ से मन्दिर का प्रांगण शोभायमान रहा करता था।

एक दिन संध्या के समय ग्राम देवी मन्दिर से बाहर निकल पड़ी और मन्दिर के आंगन के एक कोने में स्थित नीम के पेड़ पर बैठ गई। उस पेड़ से हटकर थोड़ी दूर पर एक छोटा-सा उज़डा हुआ क़िला था। इसके पार्श्व में इमली के एक पेड़ पर एक शैतान निवास करती थी। पर शैतान होते हुए भी वह गाँव के लोगों को किसी प्रकार हानि नहीं पहुँचाती थी। ग्राम देवी इसलिए उसके प्रति आदर का भाव रखती थी और अक्सर उसके साथ बात-चीत किया करती थी। एक दिन बात-चीत के सन्दर्भ में देवी ने शैतान को बताया कि उस गाँव के लोग कैसे उसके प्रति श्रद्धा और भक्ति रखते हैं और उसकी पूजा-अर्चना करके भेंट चढ़ाते हैं।

सारी बातें सुनकर शैतान ने देवी को समझाया— "माता जी! आप बड़ी सीधी-सादी और भोली-भाली हैं। ये मानव अत्यन्त धूर्त और धोखे़बाज़ होते हैं। वे लोग अपने स्वार्थ के लिए ही आपस में स्नेह और आदर प्रदर्शित करते हैं और साथ ही अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही देवी-देवताओं के प्रति भी भक्ति और श्रद्धा प्रकट करते हैं। आपका आश्रय लेकर आपकी सम्पत्ति हड़प कर जीने वाले कुछ बुजुर्ग भी इस गाँव में हैं।"

ग्राम देवी को यह बात बुरी लगी। उसने शैतान को डांटकर कहा— "तुम मनुष्यों से ईर्ष्या करती हो! इसीलिए उन पर दोषारोप करती हो! मैं साबित करके दिखा दूं कि मेरे भक्त सदा मेरे आदेशों का पालन करते हैं और कभी

कमला नागर

उनका उल्लंघन नहीं करते ?"

उसी समय गाँव का ओझा वहाँ पर आया और मन्दिर की परिक्रमा करने लगा।

ग्राम देवी शैतान को उसे दिखाती हुई बोली— "यह बेचारा अत्यन्त गरीब आदमी है। कई दिनों से मेरी पूजा करता आ रहा है। मैं आज रात को ही इसको अपना अनुग्रह प्रदान करने वाली हूँ।"

"अच्छी बात है। पर यह मनुष्य आपके प्रति कितनी श्रद्धा और भक्ति रखता है? इसकी जांच करने का मुझे मौक़ा दीजिए! मैं भी उसकी सहायता करूँगी।" शैतान ने कहा।

उस दिन रात को ग्राम देवी ने ओझा को सपने में दर्शन देकर बताया कि उसको देवी का अनुग्रह प्राप्त हो गया है। इसलिए वह सवेरे जाकर मन्दिर के न्यासे से मिल ले। इसके बाद न्यासे को सपने में दर्शन देकर ओझा को मन्दिर के बही-खाता का काम सौंपने का आदेश दिया।

सवेरे ओझा न्यासे से मिलने उसके घर पहुँचा। न्यासे ने ऐसा स्वांग रचा, मानों कुछ नहीं जानता हो! उसने ओझा के द्वारा ही समाचार जानकर कहा— "अरे भगवन! देवी जी ने तुमसे ऐसा बताया है! माता जी पहले ही मुझे इशारा मात्र कर देतीं तो क्या ही अच्छा होता! मैंने हिसाब-किताब रखने का काम एक आदमी को सौंपने का वचन दे दियाा है।"

इसके बाद उसी दिन शाम को न्यासा मन्दिर में गया और देवी के सामने साष्टांग दण्डवत करके बोला— "माता जी! रात को सपने में मैं आपको बताना ही चाहता था कि इतने में आप अन्तर्धान हो गईं। मैंने कल ही हिसाब-क़िताब का काम एक आदमी को सौंपने का वचन दे दिया है। सर्वत्र यह यश फैला हुआ है कि आपके भक्त वचन के पक्के हैं। क्या मैं अब अपने वचन का उल्लंघन करूँ?" यह कह कर वह आँसू बहा कर चला गया।

इस पर देवी का दिल पिघल उठा। उसने सोचा कि न्यासे को थोड़ी देर पहले कह दिया होता तो क्या ही अच्छा होता। पर देवी को यह मालूम न था कि न्यासा यह कपट नाटक इसलिए रच रहा है कि ओझा को यह काम

सौंपने पर उसको देवी की सम्पत्ति हड़पने का मौक़ा नहीं मिलेगा !

शैतान यह सारा नाटक देख रही थी। उस दिन रात को वह ओझा से सपने में मिल कर बोली— "तुम मेरे शत्रु हो; फिर भी मैं तुम्हारी सहायता करने के लिए आई हूँ। मैं इस गाँव के मुखिया की बेटी के अन्दर प्रवेश करूँगी। तुम्हारे सिवा मैं किसी मांत्रिक के मंत्रों की या झाड़ू-फूंक की परवाह नहीं करूँगी। तुम्हारे आने पर ही मैं उस लड़की को अपने प्रभाव से मुक्त करूँगी। इसका लाभ यह होगा कि जनता के बीच तुम्हारा यश फैल जायेगा और धन भी प्राप्त होगा।"

ओझा ने शैतान की बात खुशी से मान ली। दूसरे दिन उसे पता चला कि गाँव के मुखिया की बेटी के अन्दर शैतान प्रवेश कर गई है। अपना बड़प्पन जताने के लिए वह एकाध दिन रुक कर मुखिया के घर पहुँचा।

ग्राम देवी को जब यह खबर मिली कि शैतान ओझा की सहायता कर रही है; तब उसने उसी दिन ओझा को सपने में दर्शन दिये। इस पर ओझा ने रूखे स्वर में कहा— "माता जी ! मैं पहले ही दरिद्र हूँ। उस पर आप मेरा अपमान भी कर रही हैं।"

देवी ने ओझा को समझाया— "हे मेरे भक्त ! मेरी बात मान लो। इस बार निश्चय ही मैं तुम्हारा उपकार करूँगी। मैंने तुम्हारी मदद के लिए उचित धन का प्रबन्ध कर दिया। तुम कल वैष्णव गोविन्द गुप्त से मिल लो। लेकिन एक बात याद रखो, यदि सचमुच तुम मेरे प्रति भक्ति एवं श्रद्धा रखते हो तो तुम किसी और की सहायता पाने का प्रयत्न न करोगे।"

इसके बाद देवी ने गोविन्द गुप्त को सपने में दर्शन देकर यह समाचार सुनाया। गोविन्द ने भक्ति पूर्वक आश्वासन दिया— "माता जी ! आपकी जो इच्छा है, वही मेरी इच्छा है।"

दूसरे दिन जब ओझा गोविन्द गुप्त से मिला तब उसने झल्ला कर कहा— "मैं एक-एक कौड़ी मुश्किल से जोड़ कर इतना बड़ा धनवान बन पाया हूँ। दान और धर्म करने का गुण मेरे परिवार के अन्दर नहीं है। देवी जी का आदेश देना और तुम्हारा मांग बैठना-यह सब मुझे

अच्छा नहीं लगता। हां, चाहो तो तुम एक फूटी कौड़ी लेते जाओ।" यों कहकर गोविन्द ने ओझा के हाथ में एक फूटी कौड़ी धर दी।

ओझा को इस बात पर क्रोध आ गया और उस कौड़ी को फर्श पर पटक कर वहां से चला गया। इसके बाद गोविन्द गुप्त स्नान करके माथे पर त्रिपुण्ड लगा कर मन्दिर पहुँचा और देवी के चरणों पर गिर कर विनती करने लगा— "माता जी ! क्या बताऊँ ! मेरी ज़िन्दगी तिनके के बराबर हो गई है। मैंने अपनी पत्नी पर विश्वास करके सारी सम्पत्ति उसके नाम कर दी। रात को मैंने आपका आदेश उसको सुनाया तो वह एकदम चण्डी बन गई और मुझे धमकी देने लगी कि ऐसा करने पर मुझको घर से निकाल देगी। क्षमा कीजिए माता जी ! मैं आपके आदेश का पालन न कर सकने वाला कायर भक्त हूँ।" यों कह कर उठ करके घर की ओर चल दिया।

ग्राम देवी उस पर दयार्द्र होकर सोचने लगी— "बेचारा ! यह क्या कर सकेगा ? मेरे प्रति श्रद्धा-भक्ति रखते हुए भी धर्मपत्नी के सहयोग न देने पर विवश हो गया है।"

चार दिन बाद ओझा गाँव के अधिकारी के घर पहुँचा और किसी के नियंत्रण में न आने वाली शैतान को दो-चार मंत्र पढ़ कर भगा दिया। अधिकारी ने उसको पुरस्कार में काफ़ी धन दिया। इस घटना के बाद उसका नाम न केवल उस गांव में बल्कि चारों तरफ़ के गावों में भी फैल गया।

अगली बार शैतान ने ओझा को पूर्व सूचना

देकर पड़ोसी गाँव के जमींदार की पुत्री के अंन्दर प्रवेश किया। ओझा का विश्वास शैतान के प्रति बढ़ते देखकर ग्राम देवी सहन नहीं कर सकी और एक दिन रात को उसके सामने सपने में प्रत्यक्ष हो गई।

ओझा ने हाथ जोड़ कर कहा— "माता जी! आपके उपकार के लिए अनेक धन्यवाद! मैं शैतान की कृपा से जैसे-तैसे अपनी जिन्दगी घसीट रहा हूँ। इसलिए मुझको छोड़ दीजिये!"

ग्राम देवी को ओझा की बातें अपमान जनक प्रतीत हुईं; फिर भी शान्त होकर बोली— "सुनो! यह मेरी अन्तिम सहायता है। एक-दो दिनों में "रामकोटि" लिखने वाले शिव राम से मिलो। उसके यहाँ अपार सम्पत्ति है। पर उसका कोई वारिस नहीं है। तुम मुझको यह वचन दो कि आईन्दा शैतान के साथ सम्पर्क नहीं रखोगे। तभी मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

ओझा ने अनिच्छा पूर्वक देवी को वचन दिया और दूसरे दिन शिवराम के घर पहुँचा। उस वक्त शिवराम बड़े मनोयोग के साथ "राम-राम" लिख रहा था, इसलिए ओझा को थोड़ी देर रुक जाने को कहा।

आध घड़ी के बाद सर उठा कर शिवराम ने आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा और कहा— "देवी ने रात को तुम्हारे बारे में बताया है। वैसे तो मैंने यह बात देवी से नहीं बताई। दर असल जब तक मैं देवी की उपासना करता रहा, तब तक मेरा एक भी काम नहीं बना। इस समय मैं राम-कोटि लिख रहा हूँ। इससे मुझे अपूर्व मानसिक शांति मिल रही है। इसके समाप्त हो
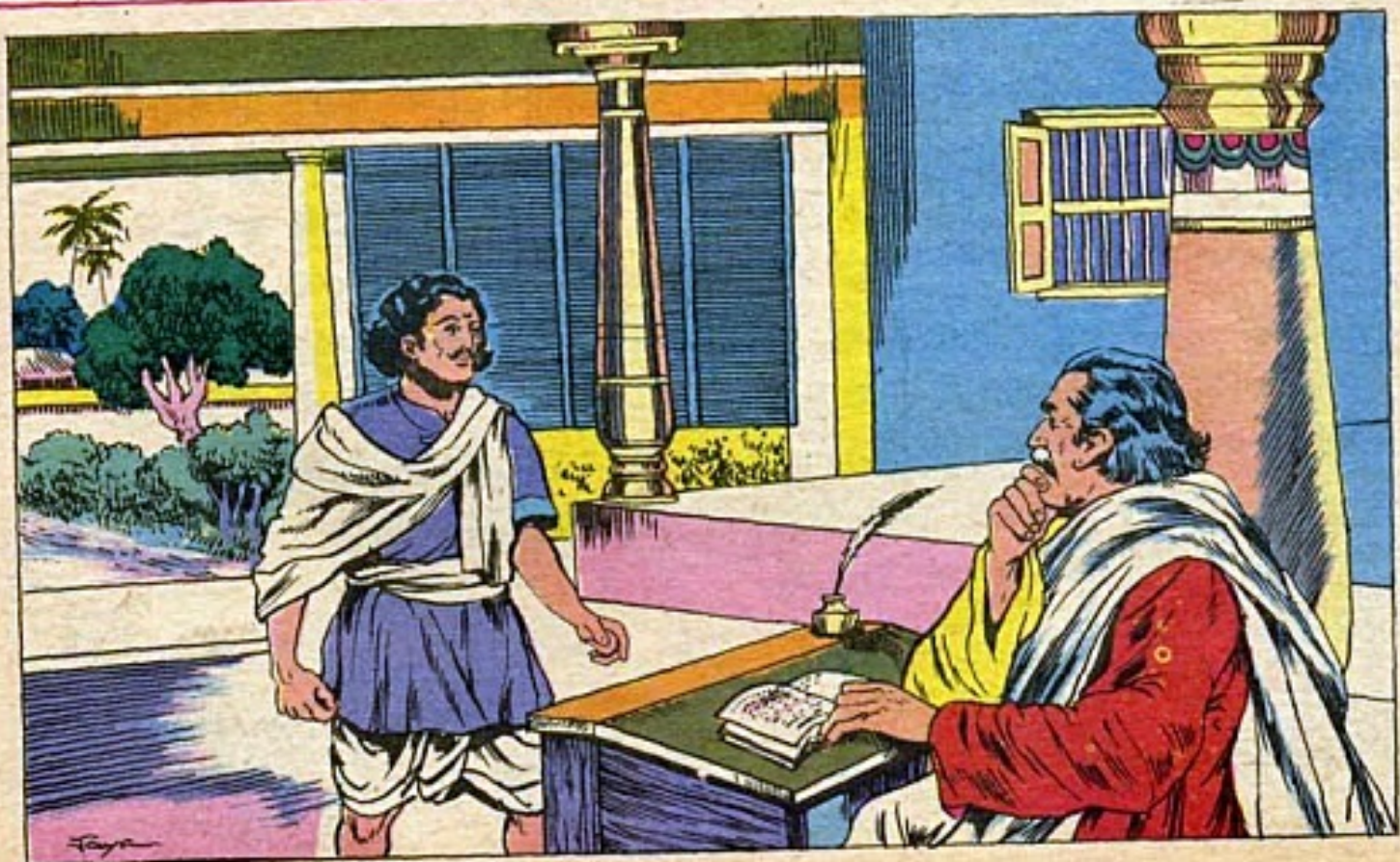
जाने पर मुझे पुण्य की कोई कमी नहीं रहेगी। तब मैं अपनी सारी सम्पत्ति उस व्यक्ति को सौंप जाऊँगा, जो मुझको पसन्द करेगा।"

ये बातें सुन कर ओझा अपमान से दुखी हो घर की तरफ़ चल पड़ा। रास्ते में उसे जमींदार का नौकर मिला और बोला— "महाशय ! मैं आप ही की खोज में हूँ। जमींदार की पुत्री के अन्दर शैतान प्रवेश कर गई है। जल्दी मेरे साथ चलिये।" ओझा सीधे जमींदार के घर पहुँचा। जमींदार ने आदर पूर्वक उसका स्वागत किया और अपनी पुत्री के कमरे की ओर जाने का इशारा किया।

ओझा ने कमरे में प्रवेश करके किवाड़ बन्द कर दिये। तब जमींदार की बेटी के अन्दर प्रविष्ट शैतान चिल्लाती और तालियाँ बजाती हुई बोली— "मुझ को यहाँ पर बड़ा अच्छा लग रहा है। स्वादिष्ट भोजन और मुलायम गद्दे मिले हैं। इसलिए अब मैं यहीं पर रहूँगी। तुम अपने रास्ते चले जाओ।"

शैतान की बातें सुन कर ओझा को लगा, मानों उसके सर पर गाज गिर गई हो। यदि वह शैतान को नहीं भगा सका तो उस पर नाराज़ होकर जमींदार उसको फांसी दे देगा। इस उलझन से बचने का कोई उपाय न पाकर वह अपने घर की ओर चल पड़ा।

उस रात को नींद नहीं आई। आख़िर तीसरे पहर में उसकी आंख लग गई। उस वक्त सपने में ग्राम देवी प्रत्यक्ष होकर बोली— "शैतान भले ही तात्कालिक रूप से सहायता करे, आख़िर शैतान तो शैतान ही होती है। यह बात भूल कर तुम मुसीबत में फंस गये हो। फिर भी तुम घबराओ मत ! मेरे कहे अनुसार करो।" उस को कोई उपाय बताकर देवी अदृश्य हो गई।

ओझा दूसरे दिन वह कांच की एक झारी लेकर जमींदार के घर पहुँचा। कांच की बनी उस झारी को देखते ही शैतान पूछ बैठी— "यह कैसा अद्भुत है। ऐसा मालूम होता है कि इसके अन्दर रेशम के गुच्छों वाला झूला झूल रहा है !"

ओझा ने बड़ी सरलता से कहा— "कल रात को मेरे गुरु घोराटक विंध्याचल से लौट आए हैं। मेरी भक्ति और अतिथि-सत्कार पर

प्रसन्न होकर उन्होंने ही मुझको यह उपहार दिया है। इस झूले पर जो भी बैठेगा, उसको वह रूप प्राप्त होगा, जिसकी वह कामना करता है; लेकिन मैं यह सोच रहा हूँ कि कोई मनुष्य इस छोटी झारी के अन्दर प्रवेश नहीं कर सकेगा। ऐसी हालत में इसका उपयोग ही क्या है ?"

इस पर झट शैतान ओझा के हाथ पकड़ कर गिड़-गिड़ाने लगी— "इसके द्वारा मेरा बड़ा उपकार हो सकता है। मेरे मन में कई दिनों से बड़ी लावण्यवती बनने की इच्छा मचल रही है ! इस झारी के भीतर प्रवेश करके मुझको थोड़ी देर के लिए इस रेशमी झूले पर झूलने दो।" यों कहकर शैतान धुंए के रूप में झारी के अन्दर घुस गई। इस पर ओझा ने झट झारी का ढक्कन बन्द कर दिया। ओझा के धोखे को भांप कर शैतान चीख़कर उछलने लगी— "यह तो सरासर अन्याय है, दगा है।"

ओझा खिल-खिलाकर हंस पड़ा और बोला— "तुमने जमींदार की बेटी के भीतर से बाहर निकलने से इनकार करके मेरी जान पर आफ़त ढा दी। तुम शैतान हो और मैं मनुष्य हूँ। एक मनुष्य के रूप में मैं इतना भी अपना प्रयोजन सिद्ध न करूँ तो अपने समाज में जिन्दा नहीं रह सकता। यह जो कुछ हुआ है, ग्राम देवी की कृपा से हुआ है।" यों कहकर कांच की झारी के साथ शैतान को भी उसने ज़मीन के अन्दर दफ़ना दिया।

जमींदार ने खुश होकर ओझा को पांच एकड़ जमीन पुरस्कार में दी और उसके पैर में चांदी का कड़ा पहनाकर गाँव में घोड़े पर उसका जुलूस निकलवाया।

इस घटना के बाद ग्राम देवी को एक सत्य का बोध हुआ। वह सभी मनुष्यों को सरल और निस्वार्थ भक्त मानती आ रही थी, पर शैतान की दृष्टि में सब लोग दुष्ट होते हैं। सच्ची बात यह है कि मनुष्यों के भीतर अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के लोग होते हैं ! इस सत्य को जानने के बाद ग्राम देवी ने अपने भक्तों को सपने में दर्शन देना और उनसे वार्तालाप करना बन्द करके मौन धारण कर लिया।

व्यापार का रहस्य

कालीचरण और शिवलाल एक ही गांव के निवासी थे। एक बार काली चरण को रुपयों की सख़्त जरूरत आ पड़ी। उसने अपनी घोड़ा-गाड़ी सौ रुपये में शिवलाल को बेच दी। इसके बाद उसके मन में यह सन्देह हुआ कि उसने अपनी गाड़ी सस्ते दाम में बेच डाली है। यह विचार कर उसने शिवलाल से फिर दो सौ रुपये में उसे वापस खरीद ली।

इसके बाद शिवलाल को घोड़ा-गाड़ी की जरूरत पड़ी और उसने कालीचरण से तीन सौ रुपयों में खरीद ली।

इस प्रकार घोड़ा-गाड़ी उन दोनों की जरूरत के अनुसार हाथ-बदलते आठ सौ रुपये तक पहुंच गई। इसके बाद पड़ोसी गांव के एक व्यापारी ने वह गाड़ी कालीचरण से एक हज़ार रुपये में खरीद ली।

यह समाचार मिलते ही शिवलाल नाराज़ होकर कालीचरण के घर पहुंचा और डांटकर बोला—"कालीचरण! तुम निरे मूर्ख हो। व्यापार का रहस्य बिल्कुल नहीं जानते हो! हम दोनों को आज तक बहुत-सा लाभ पहुंचाने वाली गाड़ी को तुमने नाहक़ पड़ोसी गांव वाले के हाथ बेच दिया।"
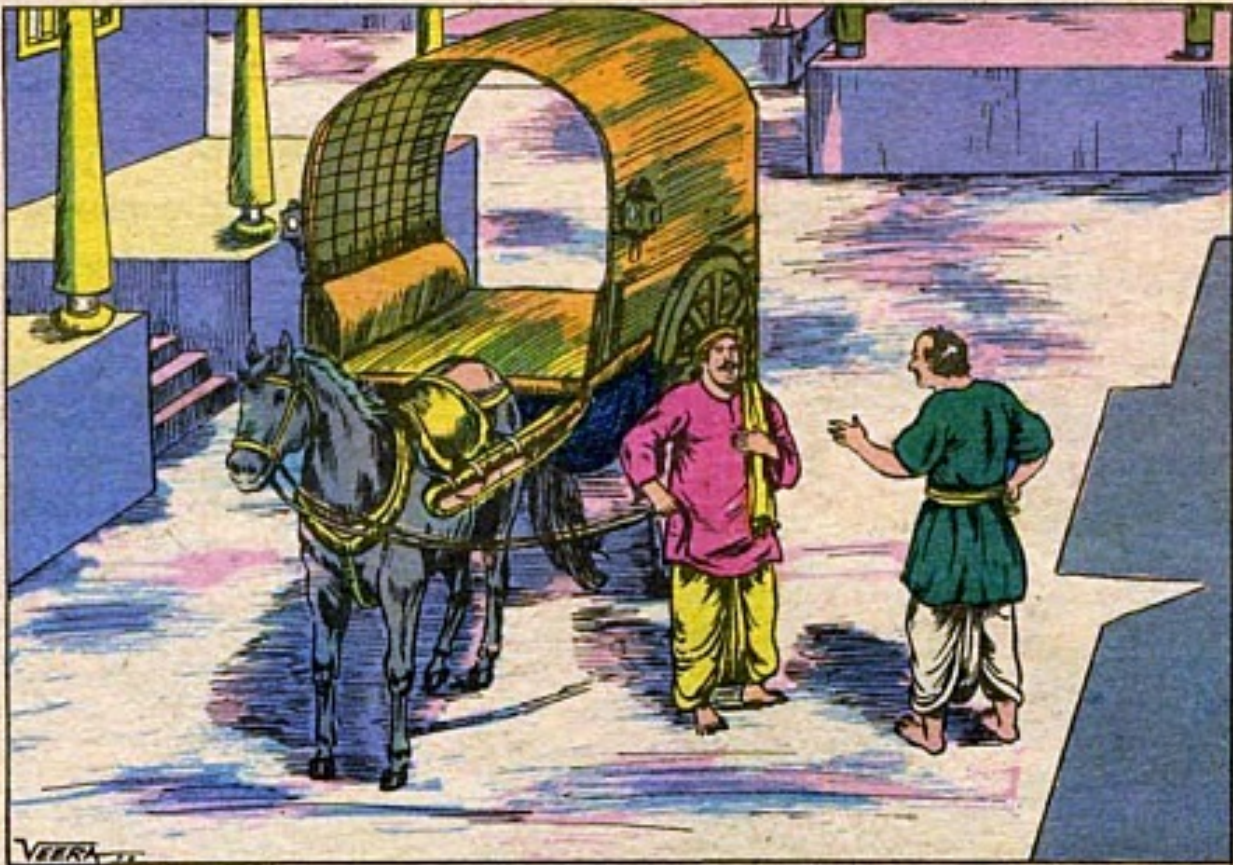
विष्णु पुराण

मुनियों ने सूत महर्षि से पूछा— "मुनींद्र ! हमने सुना है कि विष्णु अपने एक अन्य रूप कृष्ण की आकृति में गोलोक में वास करते हैं। हम उस कृष्ण के बारे में पूरा वृत्तान्त सुनना चाहते हैं।"

इस पर सूत मुनि ने यों कहना प्रारम्भ किया-

सत्य लोक के ऊपर गोलोक है। वह सदा-सर्वदा अनेक नक्षत्रों के समूह के साथ ज्योत्स्ना से भरा रहता है। विष्णु अत्यन्त गहरे नीले रंग के कृष्ण के नाम से वहाँ पर प्रवाहित होने वाली दिव्य नदी विरजा के तट पर तुलसी वन में मुरली बजाते दिव्य संगीत की रचना करते रहते हैं। उस मुरली के भीतर से ध्वनित होने वाले नाद ने राधा की आकृति धारण की।

राधा प्रकृति तथा कृष्ण पुरुष के रूप में एक दूसरे से कभी अलग न होने वाली जोड़ी के रूप में गोलोक में विहार किया करते हैं। सुदाम सदा-सर्वदा उनकी सेवा किया करता है।

राधा देवी के शरीर से असंख्य गोपिकाओं का उद्भव हुआ। विरजा नदी नारी रूप धारण कर वृन्दा देवी के रूप में प्रेम पूर्वक कृष्ण की आराधना किया करती है।

एक बार राधा और कृष्ण परस्पर अनुराग में आबद्ध हो एकान्त में थे। उस वक्त कृष्ण की खोज में विरजा पहुंची। राधा ने उसको शाप दिया कि वह पृथ्वी पर जन्म ले। इस पर सुदाम ने आपत्ति उठा कर राधा से कहा कि इस प्रकार विरजा को शाप देना अनुचित है।

इस पर राधा ने कुपित होकर सुदाम को भी शाप दे डाला— "तुम भी राक्षस होकर पृथ्वी
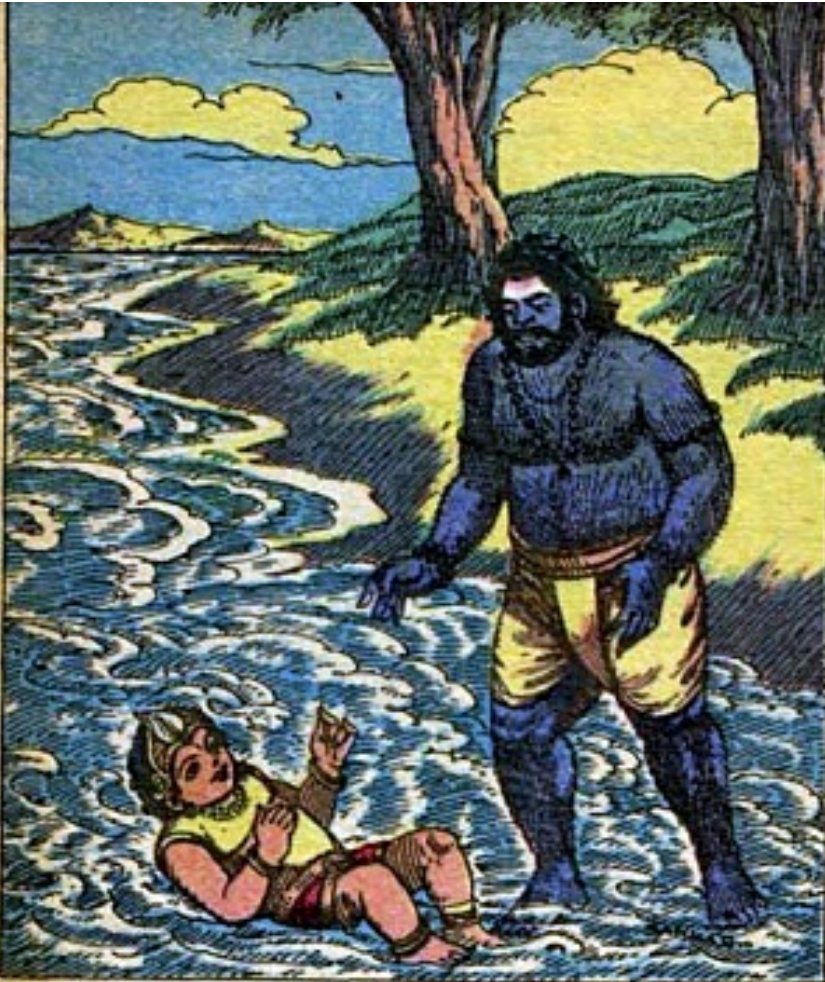
पर जन्म धारण करो !" राधा के शाप के फल-स्वरूप विरजा एक राजकुमारी तुलसी तथा वृन्दा के नामों से पैदा हुई ।

एक बार इन्द्र कैलास पर गये । वहाँ द्वार को रोक कर रुद्र भट के रूप में स्थित शिव जी को न पहचानने के कारण उन पर अपने वज्रायुध का प्रयोग करना चाहा । तब शिव जी ने अपने वास्तविक रूप में आकर तीसरा नेत्र खोल दिया ।

इन्द्र ने उनके चरणों पर गिर कर अपनी रक्षा करने की प्रार्थना की । इस पर शान्त हो शिव जी ने अपने तीसरे नेत्र से उत्पन्न क्रोधाग्नि को समुद्र में फेंक दिया । उसी समय राधा देवी के शापवश सुदाम ने गोलोक से अग्निक्षेत्र में गिर कर समुन्दर के अन्दर श्वेत शंख को अपने सर पर धारण करके एक बालक के रूप में जन्म धारण किया । सुदाम और कृष्ण दोनों एक ही थे । कृष्ण का अपने सहचर सुदाम के प्रति अपार अनुग्रह था । इस कारण उन्होंने उस बालक को अजेय कृष्ण कवच प्रदान किया ।

उस समय दम्भ नामक राक्षस समुद्र के तट पर पुत्र प्राप्ति के लिए घोर तपस्या कर रहा था । उस राक्षस राजा ने समुद्र जल से प्राप्त उस बालक को अपने पुत्र के रूप में ग्रहण किया । वही जलन्धर तथा शंखचूड नाम से पुकारे गये ।

तुलसी विष्णु को अपना पति मान कर उनकी आराधना करते हुए तपस्या में लीन थी । उस स्थिति में एक दिन जलन्धर ने उसे देखा ।

इस के बाद जलन्धर ने तुलसी के पिता धर्मध्वज से मिलकर अपनी इच्छा प्रकट की कि वे तुलसी का विवाह उसके साथ कर दें ।

आखिर जलन्धर के साथ तुलसी का विवाह हुआ । वैसे जलन्धर ने तुलसी के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उसके साथ विवाह तो कर लिया पर उसके राक्षसत्व को तुलसी का सात्विक तत्व विवाह के समय ही अच्छा न लगा । विवाह वेदिका से उठने के पश्चात जलन्धर ने फिर कभी तुलसी की ओर आँख उठा कर तक न देखा ।

पर तुलसी सदा अपने पति का ही स्मरण करती हुई उसके चरण-चिह्नों की आराधना करती रही । जलन्धर राक्षसों का सम्राट बना और उसने अपने कृष्ण-कवच के प्रभाव से ही

तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की ।

एक बार कलह प्रिय नारद मुनि ने जलन्धर के सामने पार्वती के अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन किया । इस पर जलन्धर ने कैलास पर हमला कर दिया और शिवजी को युद्ध के लिए ललकारा— "तुम चुपचाप पार्वती को मुझे सौंप दो, वरना मेरे साथ युद्ध के लिए तैयार हो जाओ ।" इस पर शिवजी ने कुपित होकर जलन्धर पर अपने त्रिशूल का प्रहार किया पर उनका त्रिशूल जलन्धर के वक्ष से लग कर नीचे गिर पड़ा ।

पार्वती भयभीत हो भाग गई और राधा देवी की शरण में चली गई । इस पर राधा देवी ने पार्वती को समझाया— "जलन्धर शिवजी की नेत्राग्नि से ही पैदा हुआ है । इसलिए शिवजी के द्वारा ही उसका संहार संभव है । लेकिन उस को जो कृष्ण कवच प्राप्त है, इस की वजह से कोई भी अस्त्र-शस्त्र उसकी हानि नहीं कर सकता । तुलसी देवी के पातिव्रत्य से उसके प्राणों के लिए कोई खतरा नहीं है । फिर भी विष्णु की माया से परे कोई वस्तु नहीं है । तुम विष्णु की प्रार्थना करो । वे ही तुम्हारी सहायता कर सकते हैं ।"

पार्वती की प्रार्थना सुन कर विष्णु वृद्ध ब्राह्मण के रूप में पहुँचे और अनेक प्रकार से जलन्धर की प्रशंसा की— "तुम तो वीरों के सिरमौर हो । तुम्हारे लिए एक और कवच की आवश्यकता ही क्या है ? जाड़े के बुखार से

प्रीड़ित मुझ जैसे व्यक्ति को यदि वह कवच दान कर दो तो मैं बच सकता हूँ ।"

जलन्धर ने हर्ष में आकर कहा— "तुम्हारा कहना सही है । कृष्ण कवच की मेरे लिए आवश्यकता ही क्या है ।" यों कह कर उसने कृष्ण कवच ब्राह्मण को दान कर दिया । इसके बाद विष्णु जलन्धर के रूप में तुलसी देवी के महल में गये । उधर कैलास में शिवजी तथा जलन्धर के बीच भीषण संग्राम चल रहा था ।

किसी जमाने में गण्डकी नामक एक देव-वेश्या ने पृथ्वी लोक में पहुँच कर विष्णु की घोर तपस्या की । विष्णु ने प्रसन्न होकर उसे वर मांगने का आदेश दिया । इस पर गण्डकी ने विनम्र स्वर में निवेदन किया— "भगवान,

आपको मेरे अन्दर इस प्रकार छिपा रखने की मेरी प्रबल कामना है जैसे लोग रत्नादि निधियों को गुप्त रूप से सुरक्षित रख लेते हैं।"

विष्णु ने समझाया— "तुम पृथ्वी पर गण्डकी नदी के रूप में प्रवाहित हो जाओ। मैं तुम्हारे भीतर शालिग्राम बन कर आ जाऊँगा।" इस पर गण्डकी ने नदी का रूप धारण किया।

उधर तुलसी देवी ने माया के प्रभाव में आकर विष्णु को अपना पति समझ लिया। वह बहुत समय बाद अपने पति को अपने महल के अन्दर पाकर आनन्द से भर उठी, और भ्रम में पड़ कर अपने पति के रूप में स्थित विष्णु के चरणों में प्रणाम किया। उसी समय शिवजी ने जलन्धर के कण्ठ को अपने त्रिशूल से भेद डाला। उसका सिर उछल कर तुलसी देवी के हाथों का स्पर्श करते हुए नीचे आ गिरा। तभी विष्णु ने पुनः अपने असली रूप को धारण कर लिया। तुलसी चौंक पड़ी। अपने भ्रम से मुक्त होकर तुलसी ने विष्णु को शाप दिया— "हे विष्णु, आपने मुझ को धोखा दिया है। इस अपराध के फल स्वरूप आप शिला के रूप में बदल जाइए।"

विष्णु मंद हास करके बोले— "हे तुलसी सती, मैं तुम्हारे शाप को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ। तुम्हारा पति जलन्धर और कोई नहीं, बल्कि सुदाम हैं। मैं कृष्ण-सुदाम के रूप में पृथ्वी लोक में रहूँगा। तुमने अपने विवाह के पूर्व मुझ को पति के रूप में पाने के लिए मेरी प्रार्थना की थी। विवाह के पश्चात अपने पातिव्रत्य धर्म का अनुसरण करके सती जगत के लिए आदर्शप्राय बन गई। साथ ही परम साध्वी और सती तुलसी के रूप में आचरण किया। तुम पवित्रता के चिह्न के रूप में तुलसी के पौधे के रूप में-पृथ्वी पर अवतार लोगी। तुलसी मेरे लिए अत्यन्त प्रीति पात्र बनकर रहेगी। मैं तुलसी के सान्निध्य में सदा शालिग्राम के रूप में रहूँगा।

इसके बाद विष्णु गण्डकी नदी में शालिग्राम शिलाओं के रूप में अवतरित हुए। तुलसी पृथ्वी पर पौधे के रूप में अवतरित हुई।

गण्डकी नदी में अपूर्व ढंग से प्राप्त शालिग्राम शिलाओं को तुलसी-पौधे के आगे रख कर उसकी अर्चना करने की परिपाटी चल

पड़ी। तुलसी दल यदि शालिग्राम शिला पर झरते रहते हैं, तो विष्णु पवित्र तुलसी मालाएँ धारण किया करते रहते हैं।

एक बार महर्षियों के सामने यह विवाद उत्पन्न हुआ कि त्रिमूर्तियों में कौन महान है। इस पर इस का निर्णय करके पता लगाने के लिए उन सबने भृगु महर्षि को भेजा। भृगु सबसे पहले सत्य लोक में पहुंचे। वहाँ पर ब्रह्मा सरस्वती देवी के वीणा-वादन में निमग्न थे। इसलिए उन्होंने भृगु के वहाँ पर पहुंचने पर भी ध्यान न दिया। इसके बाद भृगु महर्षि कैलास पहुँचे। वहाँ पर शिवजी पार्वती के साथ नृत्य कर रहे थे। इसलिए वे उस हालत में भृगु को देख खीझ उठे।

दो स्थानों पर अपमानित होकर भृगु महर्षि क्रोध में आ गए। उनके एक चरण में नेत्र था। इस कारण वे अधिक अहंकार रखते थे। वे कुपित होकर वैकुण्ठ में पहुँचे। उस समय श्री महाविष्णु लक्ष्मी देवी के साथ शेष शैय्या पर विराजमान थे। भृगु ने असहनीय क्रोध में आकर विष्णु के वक्षस्थल पर लात मार दी।

इस पर विष्णु झट उठ खड़े हो गये और महर्षि को प्रणाम किया तथा उनके चरण को अपने सिर पर रख कर विनम्रता पूर्वक बोले—"महर्षि, आप का मृदु चरण मेरे कठिन वक्ष का आघात पाकर न मालूम कैसा क्षत-विक्षत हो गया होगा।" यों कहकर उनके चरण दबाने का नाटक रचते हुए उन्होंने उनके चरण तल के नेत्र को दबा दिया। इससे भृगु महर्षि का अहंकार जाता रहा। इस पर भृगु ने विष्णु की स्तुति की और पृथ्वी लोक को लौट कर उन्होंने मुनियों को विष्णु का महत्व बताया।

लक्ष्मी जिस समय विष्णु के वक्ष स्थल से टिक कर बैठी थी उस वक्त भृगु महर्षि का विष्णु को लात मारना उनके लिए अपमान जनक प्रतीत हुआ। इस पर लक्ष्मी ने सोचा कि मुनि के चरण-स्पर्श से विष्णु अपवित्र हो गये हैं। यों विचार करके वह वैकुण्ठ को छोड़ पृथ्वी लोक में आ गई और तपस्या में लीन हो गई।

इस पर विष्णु लक्ष्मी की खोज में मानव का रूप धर कर पृथ्वी लोक में पहुंचे और अरण्यों के बीच उन की खोज करते हुए श्रीनिवास नाम से वकुला देवी के आश्रम में पहुँचे। वकुला

माता विष्णु के कृष्णावतार के समय यशोदा थी ।

कृष्णावतार के समय कृष्ण बहुत दिन बाद व्रेपल्ले पहुँच गये थे । उस समय यशोदा देवी ने कृष्ण से कहा था— "कृष्ण, तुम नहीं जानते कि माता अपने पुत्र का विवाह करने की कैसी प्रबल इच्छा रखती है । मेरी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाई ।" इसके उत्तर में कृष्ण ने यशोदा देवी को समझाया था— "माँ, तुम अगले जन्म में अपनी इस इच्छा की पूर्ति कर सकोगी ।"

अब इस जन्म में वकुला देवी श्रीनिवास को अपने पुत्र के रूप में मान कर परमानंदित हुई । वकुला के पुत्र के रूप में श्रीनिवास प्रसन्नता पूर्वक पलने लगे । एक दिन वे एक उद्यान में टहल रहे थे, तब आकाश राज की पुत्री पद्मावती अपनी सखियों के साथ वन विहार करने के लिए उसी उद्यान में आ पहुँची ।

उसी वक्त एक मस्त हाथी चिंघाड़ता हुआ उस वन के अन्दर दौड़ कर आया । राजकुमारी की सखियाँ भय कंपित हो भाग गईं । उस घबराहट में राजकुमारी पद्मावती भागती हुई श्रीनिवास के समीप आकर गिर गई ।

श्रीनिवास हाथी को रोकते हुए हाथी और पद्मावती के बीच खड़े हो गये । इस पर मस्त हाथी हठात् रुक गया और अपनी सूंड उठा कर उसने श्रीनिवास को प्रणाम किया । इसके बाद श्रीनिवास ने अपने हाथ का सहारा देकर पद्मावती को ऊपर उठाया ।

पद्मावती और श्रीनिवास के बीच परस्पर अनुराग उत्पन्न हो गया । पद्मावती अपने पूर्व जन्म में विष्णु को पति के रूप में पाने के लिए तपस्या कर रही थी । उस समय रावण के स्पर्श से क्षुब्ध होकर योगाग्नि में वह भस्मीभूत हो गई थी । वही वेदवती थी । अब वह पद्मावती के रूप में अवतरित हुई थी । इसके बाद वकुला देवी अपने साथ अरुन्धती तथा सप्त ऋषियों को लेकर आकाश राजा के महल में पहुँची और उन की पुत्री पद्मावती के साथ श्रीनिवास का विवाह करने की कामना व्यक्त की ।

इस बीच भीलनी के रूप में जाकर श्रीनिवास ने पद्मावती को बताया कि उसके मन में जिस वर के साथ विवाह करने की इच्छा है, उसी के साथ उसका विवाह होगा ।
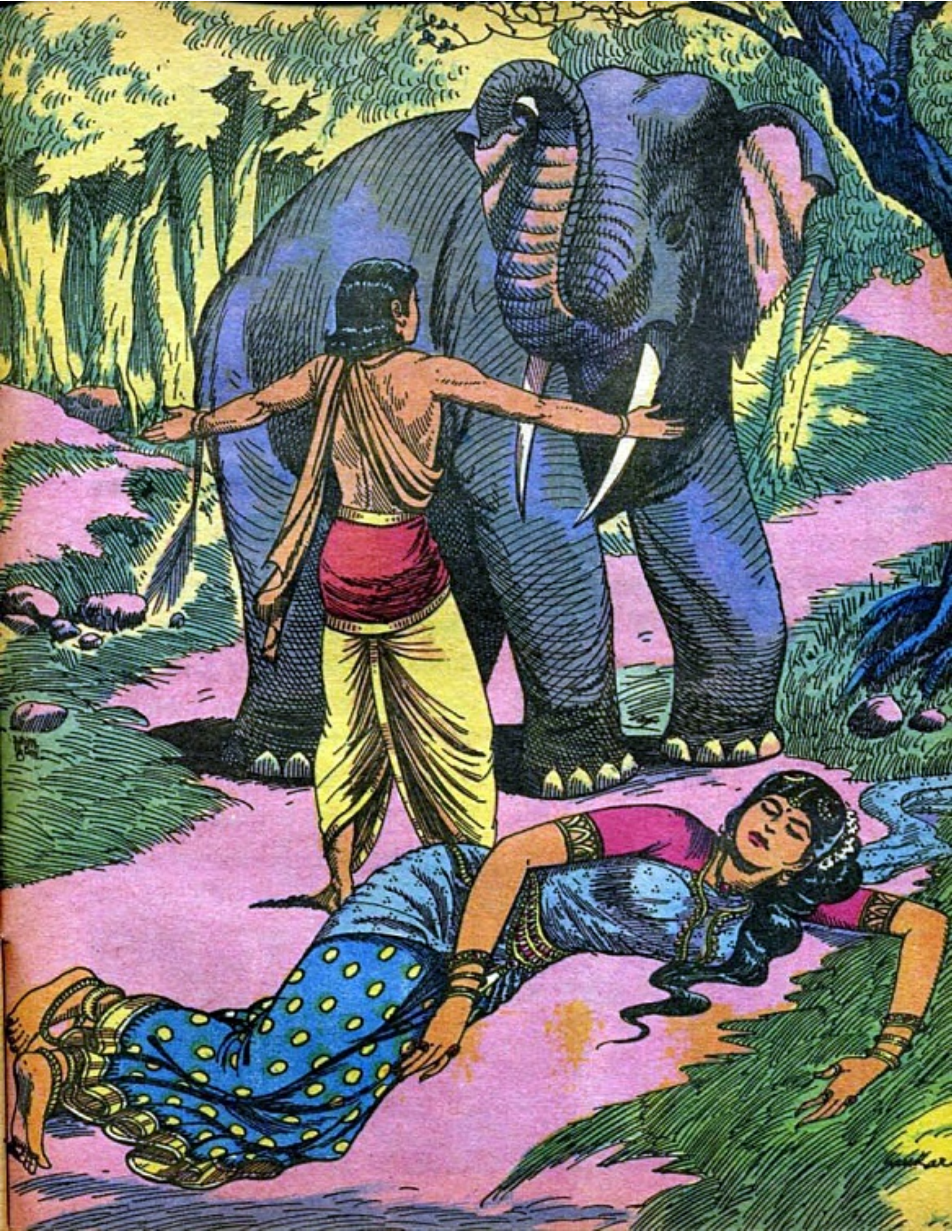
पद्मावती और श्रीनिवास का विवाह वैभव पूर्वक संपन्न हुआ। इस विवाह के खर्च के लिए कुबेर ने धन, कनक व रत्न भेज दिये थे। विवाह के बाद श्रीनिवास पद्मावती को अपने साथ लेकर चल पड़े।

तपस्या में लीन लक्ष्मी देवी को नारद ने जाकर श्रीनिवास के साथ पद्मावती के विवाह होने का शुभ समाचार सुनाया। इस पर लक्ष्मी आवेश में आ गई और वहाँ से चल पड़ी।

अपने समीप वाली लक्ष्मी देवी को देख श्रीनिवास पद्मावती को वहीं पर छोड़ कर शीघ्र गति से सात शिखरों वाली शेषाद्रि पर चढ़ गये और अंतिम शिखर पर पहुँच कर खड़े हो लक्ष्मी देवी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

लक्ष्मी देवी के समीप आते ही श्रीनिवास उनकी तीक्ष्ण दृष्टि के बदले में मन्दहास करते हुए काले रंग की शिला के रूप में परिवर्तित हो गये। उस मूर्ति के कण्ठ में तुलसी दल की मालाएं दिव्यत्व को प्राप्त कर शोभायमान हो उठीं। उस मूर्ति के भीतर विष्णु, शिव और शक्ति के अंश दिखाई पड़े। साथ ही अनेक दिव्य रूप प्रत्यक्ष हो उठे।

इसके बाद वे अपने भक्तों को उनके वांछित रूप में दर्शन देते हुए श्रीनिवास, वेंकटरमण, और वेंकटेश्वर के नाम से पुकारे जाने लगे। इस प्रकार विष्णु, सप्तगिरि के अधि देवता के रूप में वहाँ पर स्थापित हो गये।

पद्मावती शेषाद्रि के समीप ही अलमेलु मंगम्मा के रूप में विराजमान हो गई। लक्ष्मी ने जहाँ तप किया था, वहाँ पर वह महालक्ष्मी के रूप में स्थापित हुईं। उसी स्थान पर कोलाहपुर निर्मित हुआ और वह लक्ष्मी देवी का निलय बन गया।

अपने प्रति विश्वास रखने वाले भक्तों की विपदाओं से रक्षा करते हुए, पुकारते ही ध्यान देने वाले वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में विष्णु, शेषाद्रि के शिखर पर "कलियुग के देवता" के रूप में वैभव पूर्वक विराजमान हो गये। विष्णु की ये सारी लीलाएँ सुन कर मुनिजन परमानन्दित हो उठे।

व्यापारी की परीक्षा

धनंजय गुप्त नामक एक व्यापारी को शहर से सौदा लाने के लिए सहायक के रूप में काम करने के लिए एक कर्मचारी की जरूरत पड़ी। उसने अपने एक सह-व्यापारी मित्र से यह बात बताई। इस पर उसने गिरिनाथ और अमरनाथ नामक दो युवकों को चुन कर धनंजय गुप्त के पास भेजा।

धनंजय ने उन युवकों को बरामदे में बिठाया और भीतर चला गया। एक घंटे बाद वह हड़बड़ाते हुए वापस आया और बोला— "तुम दोनों बुरा न मानो। मैं एक जरूरी काम से वीरेन्द्र पुर जा रहा हूँ। मेरे लौटने में रात को बड़ी देर लग सकती है। इसलिए तुम दोनों कल सवेरे आ जाओ। तुममें से किसी एक को मैं जरूर काम दूँगा।"

धनंजय गुप्त अपने साथ धन की एक थैली ले जा रहा था। उसको छिपाने का तरीका देख गिरिनाथ बोला— "महाशय! वीरेन्द्र पुर में चोर और डाकुओं का बोल-बाला है। पलक मारते ही बड़ी चतुराई से धन चुराने वाले वहाँ बड़े कुशाल चोर हैं। अब तक चार दफ़े मैं वहाँ धन खो चुका हूँ। इसलिए आपको बहुत सावधान रहना होगा।"

"ओह, ऐसी बात है। अच्छा, यह बताओ। वहाँ की सरायों में खाने-पीने का इंतज़ाम कैसा है? तुम अपने अनुभव सुनाओ।" —धनंजय ने पुछा।

"वहाँ की सरायों में एक तो खाना अच्छा नहीं होता। जब भी मैं गया, वहाँ का खाना खाकर मैं बराबर बीमार होता रहा।" गिरिनाथ ने उत्तर दिया।

इसके बाद धनंजय ने अमरनाथ से पूछा— "सुनो भाई! तुम भी एकाध-बार वीरेन्द्र पुर तो गये ही होगे! बताओ, तुम्हारा अनुभव कैसा है?"

अमरनाथ ने कहा — "गिरिनाथ का कहना

सरला त्रिपाठी

सच है। मैं भी एक बार वहाँ धन खो चुका हूँ। इसके बाद मैं बहुत सावधान रहा, इस कारण से फिर कभी ऐसी बात नहीं हुई। सराय का खाना खाकर मैं भी एक दफ़ा बीमार हो गया। इसलिए मैं इस बात को याद रखकर जब भी वीरेन्द्र पुर जाता, मैं अपने साथ आवश्यक दवाइयाँ ले जाता था। और बीमार पड़ने से अपने को बचा लेता था। आपके लिए भी अपने साथ कुछ दवाइयाँ ले जाना उचित होगा।" यों अपना अनुभव सुनाकर, उसने उन दवाइयों के नाम भी बता दिये।

धनंजय ने प्रसन्नता पूर्वक सर हिलाकर अमर नाथ से कहा— "तुम कल से काम पर आ सकते हो।"

इस पर गिरिनाथ गुस्से से बोला,— "महाशय ! आपका यह निर्णय न्याय संगत नहीं है। आपने हम दोनों को कल आकर आपसे मिलने को कहा, पर जल्दबाजी में आकर आपने अभी निर्णय ले लिया, इसका तो यह अर्थ हुआ कि आप मेरी बुद्धिमत्ता पर शक करते हैं।"

ये बातें सुनकर धनंजय मुस्कुराते हुए बोला— "मैंने अभी निर्णय क्यों लिया ? इसका कारण तुम समझ नहीं पाये। मैं तुमको समझा देता हूँ। तुमने बताया कि वीरेन्द्रपुर में एक बार नहीं, चार दफ़े तुम चोरी के शिकार हो गये हो ! इससे स्पष्ट मालूम हो जाता है कि तुम कैसी सावधानी बरतते हो ? यदि एक बार तुम वहाँ की सराय में खाना खाकर बीमार पड़ गये तो दूसरी बार वैद्य की सलाह लेकर तुम्हें अपने साथ आवश्यक औषधियाँ ले जाना चाहिए था; लेकिन तुम इसके बाद जब भी वीरेन्द्र पुर गये, बीमारी के चपेट में आते रहे। इससे तुम्हारी बुद्धिमत्ता का अन्दाज़ आसानी से लगाया जा सकता है !"

धनंजय का उत्तर सुनकर गिरिनाथ ने अनुभव किया कि अमरनाथ उससे अधिक अकलमन्द तथा दूर की बातें सोचने वाला है। इससे शान्त होकर वह धनंजय को प्रणाम करके वहां से चला गया।

दिव्य औषध

किसी देश में एक राजा था। उसकी एक रानी थी। वे दोनों मूर्ख थे। रानी ने पहली बार एक लड़की को जन्म दिया। वह शिशु उनकी दृष्टि में कुरूप निकला। उसके सर पर बाल नहीं थे और न ही मुँह के अन्दर दांत थे।

"छीः, छीः, यह कैसी लड़की है ?" रानी ने घृणापूर्वक कहा।

राजा ने कहा— "यह तो अमंगलकारी शिशु है। सब लोगों पर यह बात खुल जाएगी तो हमारा कैसा अपमान होगा ?"

इस पर मंत्रियों ने राजा और रानी को सलाह दी— "आप कृपया चिन्ता न कीजिए ! जन्म के समय सभी शिशु ऐसे ही होते हैं ! धीरे-धीरे उम्र के बढ़ने के साथ उनके सर पर बाल उगने लगते हैं और दांत निकलते हैं। चाहे लाख कोशिश करें या सैकड़ों प्रकार की औषधियों का सेवन करावें, तो भी तुरन्त सर पर बाल नहीं उगते। यह तो प्रकृति का अपना नियम है। इस को कोई बदल नहीं सकता।"

"सुनो ! हमारे आँसू पोंछने के लिए ऐसी बेतुकी बातें मत बताओ। तुम लोग तुरन्त देश के सभी वैद्यों को यहाँ फ़ौरन बुलवाओ।" राजा ने आदेश दिया।

देश के सभी प्रमुख वैद्य राज महल में पहुँच गये। राजा ने उनसे कहा— "मेरे यहाँ एक लड़की हुई है। लेकिन यह हद से ज़्यादा छोटी है ! उसके सर पर बाल नहीं हैं। मुँह के अन्दर दांत नहीं हैं। तुम लोग इस पर अच्छी तरह विचार करके उचित औषधियाँ तैयार करो और इसका उचित इलाज करो। इस बात का ध्यान रखो कि यह जल्द ही बड़ी बन जाये और इसके सर पर बाल तथा मुँह में दांत निकल आयें।"

"महाराज ! यह सम्भव नहीं है !" वैद्यों ने कहा।

"सुनो ! एक चक्रवर्ती के रूप में मैं यह

पच्चीस वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

आदेश देता हूँ- कार्य कोई असाध्य नहीं होता ! तुम लोग अगर मेरे आदेशानुसार न कर सके तो तुम लोगों की पीठों पर इस प्रकार कोड़े लगवा दूँगा कि तुम्हारी पीठें छिल जायें । तुम लोग अच्छी तरह से सोच लो-मैं पाँच मिनट का समय दे रहा हूँ ।'' क्रोध में यह आदेश देकर राजा वहाँ से चला गया ।

पाँच मिनट बाद राजा लौट आया और दीनता पूर्वक सर झुकाए बैठे हुए वैद्यों से पूछा— ''बताओ, तुम लोगों ने कैसा निर्णय लिया ? मेरी पुत्री का इलाज करोगे या मार खाओगे ।''

वैद्य सब मौन रहे ।

इस पर एक वृद्ध वैद्य ने कहा— ''महाराज ! आप जल्दबाजी न करें ! हम लोग आपके आदेश का पालन करने के लिए तैयार हैं । इसके लिए एक दिव्य औषध है । उसका सेवन करने पर राज कुमारी शीघ्र बड़ी बन जाएगी । उसके सर पर बाल और मुँह में दांत अवश्य उग आएंगे ।''

''अच्छी बात है ! बताओ, वह दिव्य औषध कहाँ पर है ?'' राजा ने पूछा ।

''इस वक्त तैयार नहीं है । इसके बनाने में थोड़ा समय लगेगा ।'' वृद्ध वैद्य ने उत्तर दिया ।

''थोड़ा समय क्यों लगेगा ? मैं राजा हूँ । राजाधिराजा हूँ ! महान चक्रवर्ती और सम्राट हूँ । मेरे लिए इसी वक्त वह दिव्य औषध आना चाहिए । इसी वक्त वह औषध क्यों तैयार नहीं की जा सकती ?'' राजा ने पूछा ।

''आपका कहना सही है ! पर इस दिव्य औषध बनाने के लिए चार सौ पैंसठ प्रकार की जड़ी-बूटियाँ चाहिए और उनमें तीन सौ बारह प्रकार की धातुओं को मिलाना होगा ।'' वैद्य ने समझाया ।

राजा ने गर्व के साथ कहा— ''सारी चीज़ें लाकर दिव्य औषध बना दो ! पर ध्यान रखो, वह जल्दी तैयार हो जाये !''

''महाराज ! यह काम इतनी जल्दी होने वाला नहीं है । इसमें मिलाने वाली एक जड़ी ऐसी है, जो दो वर्षों में एक बार फूलती है । जब वह चौथी बार फूलने लगती है, तभी उसे तोड़ कर लाना होगा, इसी तरह एक धातु

बर्फ़ीली पहाड़ियों पर ही मिलती है। लेकिन विचित्र बात तो यह है कि उन पहाड़ों पर कई वर्षों में एक बार बर्फ़ गलती है। इस प्रकार दो बार गलने के पश्चात् उस धातु को खोदकर लाना होगा।" वैद्य ने समझाया।

"अच्छी बात है। यह दिव्य औषध दो हफ़्ते के अन्दर तैयार हो जाएगी न!" राजा ने पूछा।

"नहीं! इससे और ज़्यादा समय लगेगा। महाराज! आप एक काम कीजिये। आप राजकुमारी को बारह वर्ष तक हमारे पालन-पोषण में छोड़ दीजिए! ऐसी हालत में हम उचित ढंग से राजकुमारी का इलाज कर सकते हैं।" वैद्य ने सुझाव दिया।

राजा ने रानी की ओर मुड़ कर पूछा— "देवि! तुम्हारा क्या विचार है? क्या हम अपनी बेटी को बारह वर्ष तक इनके हाथों में सौंप कर इलाज करवा लें? या इन सबकी पीठों पर कोड़े बरसाने का आदेश दें?"

रानी थोड़ी देर सोच कर बोली— "इन लोगों को बारह वर्ष की अवधि देकर इनकी कुशलता की परीक्षा लेंगे। तब तक ये लोग बेटी का सही इलाज नहीं कर पाये तो एक साथ इनके सर कटवा डालेंगे!"

राजा ने रानी की बात मान ली। वैद्य राजकुमारी को अपने साथ ले गए। उन्होंने लाड़-प्यार से न केवल उसका पालन-पोषण किया; अपितु उसे उचित शिक्षा प्रदान कर योग्य भी बना दिया। राजकुमारी वैद्य के घर बारह वर्ष पलकर अपने माता-पिता के पास लौट आई।

अब उसके सर पर काले केश और उसके मुँह में सफ़ेद दांत चमक रहे थे। इस पर राजा और रानी बहुत प्रसन्न हुए और वैद्यों को भारी पुरस्कार देकर भेज दिये।

अपनी माता और पिता के स्वर्गवास के बाद राजकुमारी रानी बन गई और उसने बड़ी कुशलता पूर्वक शासन करके लोक-प्रियता प्राप्त की!

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ नवम्बर १९८४ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

Devidas Kasbekar

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ सितम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जुलाई के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : जीने की राह !

द्वितीय फोटो : सीखने की चाह !!

प्रेषक : कृष्णकुमार गुप्ता, रतन बजारिया हटा पोस्ट. हटा, जिला. दमोह ४७०-७७५

क्या आप जानते हैं ? के उत्तर

१. शरावती नदी पर स्थित जोग जलप्रपात २. हरद्वार ३. साबरमती ४. मध्य प्रदेश ५. कलकत्ता.

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, . Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adopting them in any manner will be dealt with according to law.

बाल-कथा प्रतियोगिता

आशा है तुमने अब तक बाल-कथा लिख ली होगी। नहीं तो, अब भी समय है। शायद तुम्हें याद होगा। अन्तिम तिथि ३० सितम्बर·८४ है। कथा लिखने के लिए जुलाई अंक में दिये गये निर्देशों को याद रखना।

—सम्पादक

शब्द शक्ति

[अपनी शब्द शक्ति की परीक्षा लीजिये। प्रत्येक शब्द के लिए कुछ सम्भव पर्याय दिये गये हैं। शुद्धतम अर्थ रखने वाले शब्दों को पहचानिये और परिशिष्टांक के पृष्ठ ४ पर दिये गये सही उत्तर से उन्हें मिलाइये।]

१. अनुक्रान्त — जिस पर आक्रमण किया गया हो, क्रमपूर्वक किया गया, परिवर्तित, क्रान्ति के पश्चात

२. अनुक्रोश — दुख, क्रोध, दया, ग्लानि.

३. अनमित्र — शत्रु, जो मित्र न हो, जिसका कोई शत्रु न हो,

४. अवश्य — आवश्यक रूप से, कोहरा, अनियंत्रित.

५. अवधिमान — समुद्र, निश्चित समय पर होनेवाला, काल.

६. अवसर्प — साँप के समान, भेदिया, लता.

७. अव्याज — सरलता, अपरिवर्तित, मूलधन.

८. असूया — ईर्ष्या, क्रोध, इर्ष्या नहीं करने वाली.

९. अर्जुन — वीर, धनुर्धर, स्वच्छ, सफ़ेद.

१०. अवाक्ष — देख-भाल करने वाला, खिड़की, मन्द दृष्टि वाला, जिसके नेत्र छोटे हों.

जिज्ञासा

प्रश्न- किसी भी कठोर कानून को ड्रेकोनियन कानून क्यों कहते हैं ?

—रोहित विश्वास, दार्जिलिंग

उत्तर- ड्रेको एथेंस का ईसा पूर्व ७ वीं शताब्दी का न्यायाधीश था। वह साधारण अपराधों के लिए भी सख्त से सख्त सजा देता था। उदाहरण के लिए आलसियों को फाँसी दे दी जाती थी। इसीलिए कठोर कानून को ड्रेकोनियन कानून कहा जाने लगा।

प्रश्न- विश्व का सबसे ऊँचा डाक घर भारत वर्ष में है। क्या यह सच है ? तो भारत वर्ष में वह कहाँ है ?

—संगीता, बंगलोर

उत्तर- हाँ, यह सच है। लद्दाख के चेशुल नामक स्थान में लगभग १४ हज़ार फुट की ऊँचाई पर यह डाक घर स्थित है।

प्रश्न- केंद्र शासित प्रदेशों में सबसे छोटा कौन-सा है ?

—अब्दुल रहीम, अलीगढ़

उत्तर- लक्षद्वीप। यह २७ छोटे-छोटे उप द्वीपों का समूह है।

प्रश्न- कुछ लोग बम्बई को मुम्बई क्यों कहते हैं ?

—बुलबुल, कोचीन

उत्तर- बम्बई का मूल नाम मुम्बई ही है। अंगरेज़ों ने इसे बम्बाई कहना शुरू किया। मुम्बई "अम्बा देवी" का बदला हुआ रूप है। यह यहाँ की स्थानीय अधिष्ठात्री देवी हैं।

शब्दशक्ति के उत्तर

१. क्रमपूर्वक किया गया २. दया, ३. जिसका कोई शत्रु न हो, ४. कोहरा. ५. समुद्र, ६. भेदिया, ७. सरलता, ८. ईर्ष्या, ९. स्वच्छ सफ़ेद १०. देख-भाल करने वाला.

LIKE TO FLY INTO THE EXCITING WORLD OF ADVENTURE AND HUMOUR?
DOLTON
SUPER COMICS
CAN TAKE YOU THERE
EVERY FORTNIGHT!
IT COSTS ONLY Rs. 2.50 A COPY-
EVIDENTLY THE MOST EASILY
AVAILABLE COMICS MAGAZINE
YOU'VE EVER READ:
ITS 36 FULL COLOUR PAGES TAKE YOU
THROUGH MYSTERY AND EXCITEMENT TO A
RENDEZVOUS WITH THE SUPER HEROES-
SUPERMAN
&
BATMAN
DOLTON COMICS
DC
DOLTON PUBLICATIONS
MADRAS 600 026

everest/84/PP/31-hn